हिन्दी पाक्षिक

सेमन्या कण्वघाटी

RNI No.: UTTHIN/2013/54659

वर्ष-12 अंक-18 हरिद्वार, शुक्रवार,01 अगस्त, 2025 मूल्य-दो रूपया मात्र पृष्ठ-8

हरिद्वार के मनसा देवी मंदिर में भगदड़,आठ श्रद्धालुओं की मौत

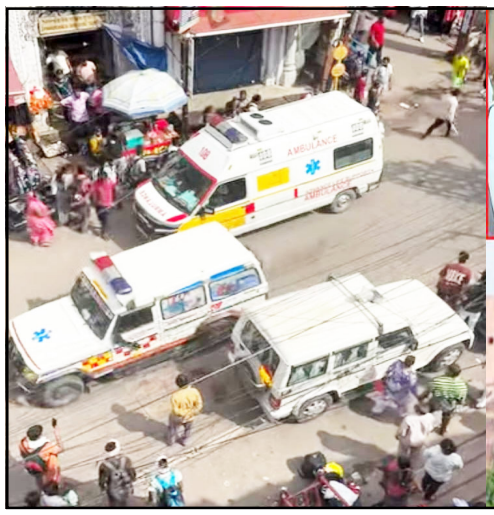

हरिद्वार । हरिद्वार के मनसा देवी मंदिर में रविवार को मची भगदड़ में आठ श्रद्धालुओं की मौत हो गई, जबकि कई अन्य गंभीर रूप से घायल हैं। पुलिस और मेडिकल टीमें मौके पर राहत व बचाव कार्य में जुटी हैं। इस हादसे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने दुख व्यक्त किया है।

प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने नरेंद्र मोदी के हवाले से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, उत्तराखंड के हरिद्वार में मनसा देवी मंदिर मार्ग पर हुई भगदड़ में हुई जान-माल की हानि से अत्यंत दुखी हूं। जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खोया है, उनके प्रति संवेदना। ईश्वर करे कि घायल शीघ्र स्वस्थ हों। स्थानीय प्रशासन प्रभावित लोगों की सहायता कर रहा है।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भी हादसे पर दुख जताते हुए एक्स पर लिखा, हरिद्वार के मनसा देवी मंदिर के मार्ग में भगदड़ की दुर्घटना में अनेक श्रद्धालुओं की मृत्यु का समाचार बहुत पीड़ादायक है। मैं सभी शोक संतप्त परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करती हूं। मैं प्रार्थना करती हूं कि घायल हुए सभी श्रद्धालु शीघ्र स्वस्थ हों। धार्मिक नगरी हरिद्वार के मनसा देवी मंदिर में रविवार सुबह एक बड़ा हादसा हो गया। हरिद्वार मनसा देवी मंदिर में करंट फैलने की अफ्वाह के बाद भगदड़ मच गई। इस घटना में अब तक 8 लोगों की मौत की सूचना है, जबकि 28 लोग घायल बताये जा रहे हैं। घटना के बाद से ही पुलिस प्रशासन मौके पर हैं। मौके पर तेजी से राहत बचाव कार्य चलाये जा रहे हैं। अधिकारी भी मौके पर पहुंच रहे हैं। मामले में प्रशासन ने ताजा जानकारी साझा की है। जानकारी के मुताबिक हरिद्वार मनसा देवी मंदिर भगदड़ हादसे में 8 लोगों की मौत हुई है। 5 लोग इस हादसे में गंभीर रूप से घायल हैं। 23 लोग सामान्य घायल है। 8 लोगों की घटना में मौत हुई हैं। 13 घायलों को एम्स हास्पिटल ऋषिकेश भेज दिया गया है। बाकी घायलों का उपचार जिला चिकित्सालय हरिद्वार में चल रहा है। घटना स्थल पर जिलाधिकारी हरिद्वार, उप जिलाधिकारी, तहसीलदार, एसडीआरएफ, एनडीआरएफ फायर, स्वास्थ्य विभाग की टीमें बचाव का कार्य में लगी हुई हैं। पीएम मोदी, सीएम धामी ने घटना की जानकारी ले इस पर दुख जताया है। रविवार को हरिद्वार में प्रसिद्ध शक्तिपीठ मां मनसा देवी मंदिर में भारी भीड़ उमड़ी हुई थी। शनिवार और रविवार वीकेंड होने के कारण भी मंदिर में अन्य राज्यों से भी आए भक्तों की भारी भीड़ जुटी हुई थी। वहीं दूसरी तरफ कांवड़ मेला खत्म होने के बाद भी कई संख्या कांवड़िए मंदिर में देवी के दर्शन के लिए पहुंचे हुए थे। बताया जा रहा है कि मंदिर के मुख्य सीढ़ी पैदल मार्ग पर ज्यादा भीड़ बढ़ने से स्थिति नाजुक बनी हुई थी तभी परिसर में करंट फैलने की खबर के बाद भक्तों के बीच भगदड़ की स्थिति बन गई। जिसके चलते सीढ़ी मार्ग पर श्रद्धालु एक दूसरे के ऊपर गिर गये। पूरे मामले पर एसएसपी प्रमेंद्र डोबाल ने बताया कि सुबह लगभग सवा 9 बजे पुलिस कंट्रोल रूम को सूचना मिली थी कि मंदिर से 100 मीटर नीचे सीढ़ी पैदल मार्ग पर भगदड़ मच गयी। जिसके बाद पुलिस फोर्स और एसडीआरएफ मौके पर पहुंची और स्थानीय लोगों के साथ सभी हताहत लोगों को रेस्क्यू कर अस्पताल लाया गया। इस भगदड़ में 8 लोगों की मौत हो गयी जबकि 28 लोग घायल हो गये। मृतकों के नाम आरुष पुत्र पंकज उर्फ प्रवेश, उम्र 6 वर्ष, निवासी सौदा बरेली, उत्तर प्रदेश, शकल देव, पुत्र बेचान, उम्र 12 वर्ष, अररिया, बिहार, विक्की पुत्र रिक्का राम सैनी, उम्र 25 वर्ष ग्राम विलासपुर, कैमरी रोड़, रामपुर, उत्तर प्रदेश, विपिन सैनी पुत्र रघुवीर सिंह सैनी, उम्र 18 वर्ष, निवासी वसुवाखेरी काशीपुर, उत्तराखंड, वकील पुत्र भरत सिंह उम्र 45 वर्ष निवासी मीहतलवाद, जिला बाराबंकी, उत्तर प्रदेश, शान्ती पत्नी रामभरोसे उम्र 60 वर्ष बदायूं, उत्तर प्रदेश, विशाल उम्र 19 वर्ष व एक 19 वर्षीय युवक नाम पता अज्ञात हैं। घायलों के नाम इन्द्र पुत्र महादेव निवासी रिसालू रोड़ पानीपत, दुर्गा देवी पत्नी श्री निर्मल, उम्र 60 वर्ष, निवासी दिल्ली, शीतल पुत्र, उम्र 17 वर्ष, तेजपाल निवासी रामपुर, उत्तरप्रदेश, भूपेन्द्र पुत्र मुन्ना लाल, उम्र 16 वर्ष, जिला बदायूं, अर्जुन पुत्र सूरज, उम्र 25 वर्ष, निवासी सिविल लाईन मुरादाबाद उत्तर प्रदेश, कुमारी कृति पुत्री उमेश शाह, उम्र 6 वर्ष, मोतीहारी, बिहार, राज कुमार पुत्र निदेश शाह, उम्र 14 वर्ष, मोतिहारी बिहार, अजय पुत्र संजय, उम्र 19 वर्ष, बड़ियारपुर बिहार, रोहित शर्मा, पुत्र कमलेश शर्मा, उम्र 21 वर्ष, निवासी जिला मैनपुरी, विकास पुत्र प्रेमपाल, उम्र 22 वर्ष, निवासी बरेली कैण्ट, उत्तर प्रदेश, काजल पुत्री अर्जुन, उम्र 24 वर्ष, निवासी सिविल लाईन मुरादबाद, आराधना कुमारी पुत्री विनोद शाह, 5 1/2 वर्ष निवासी भागलपुर, बिहार, विनोद शाह पुत्र रोहित शाह, उम्र 35 वर्ष, भागलपुर, बिहार, निर्मला पत्नी पंकज कुमार, उम्र 30 वर्ष शीशगढ़ बरेली, विशाल पुत्र छेदा लाल, उम्र 21 वर्ष रामपुर, अनुज पुत्र अर्जुन, उम्र 20 वर्ष, निवासी मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, एकांक्षी पुत्री संजीव कुमार, उम्र 4 वर्ष, धामपुर, उत्तर प्रदेश, संदीप पुत्र रमेश कुमार, उम्र 25 मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, रोशन लाल पुत्र एवं पता अज्ञात, दीक्षा निवासी रामपुर, अजय कुमार पुत्र सहदेव कुमार, उम्र 18 वर्ष, निवासी मुंगेर, बिहार, मनोज सना पुत्र भूरिया, उम्र-30 वर्ष, जिला बरेली, उत्तर प्रदेश हैं। इससे पहले, प्रदेश के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने हादसे पर दुख जताते हुए एक्स पर लिखा, हरिद्वार के मनसा देवी मंदिर मार्ग पर हुए हृदय विदारक हादसे में आठ लोगों की मृत्यु का समाचार अत्यंत दुःखद है। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगतों की आत्मा को श्रीचरणों में स्थान एवं शोकाकुल परिजनों को यह असीम दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। उन्होंने आगे लिखा, प्रदेश सरकार द्वारा मृतकों के परिजनों को 2-2 लाख रुपए एवं घायलों को 50-50 हजार रुपए की सहायता राशि प्रदान की जाएगी। साथ ही घटना के मजिस्ट्रियल जांच के निर्देश भी दिए हैं। जानकारी के अनुसार, भारी भीड़ के कारण हरिद्वार के मनसा देवी मंदिर में भगदड़ हुई है। बताया जा रहा है कि भारी भीड़ के बीच मंदिर परिसर में रविवार को अफरा-तफरी मची। धक्का-मुक्की होने के बाद वे एक-दूसरे पर गिरने लगे। इससे वहां भगदड़ जैसी स्थिति पैदा हो गई। हरिद्वार एसएसपी प्रमेंद्र सिंह डोभाल ने भगदड़ की घटना में 6 लोगों की मौत की पुष्टि की है।

हरिद्वार मनसा देवी हादसा, कांग्रेस नेताओं ने घटना पर जताया दुख

हरिद्वार । हरिद्वार मनसा देवी हादसा के बाद कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष करन माहरा, पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत, प्रीतम सिंह ने भगदड़ में मारे गए लोगो के अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त की है। साथ ही कांग्रेस ने सरकार की व्यवस्थाओं पर भी सवाल खड़े किए हैं।

हरीश रावत ने इस घटना पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए कहा मनसा देवी मंदिर में स्थान के हिसाब से ही उड़न खटोले से ही लोग आते हैं। नियंत्रित करने के लिए लंबा मार्ग है। यहां पैदल और चढ़ाई वाला मार्ग भी है। उन्होंने सवाल उठाया कि क्यों हम वहां आने वाली भीड़ को नियंत्रित नहीं कर पाए।? कहां पर हमसे चूक हो गई? यह देखना पड़ेगा।

उन्होंने कहा ऐसी जगहों पर अनुभवी और क्राउड मैनेजमेंट क्षमता वाले अधिकारियों को लगाना चाहिए। हरीश रावत ने कहा प्रदेश में धार्मिक स्थलों की तरफ लोग निरंतर आ रहे हैं। ऐसे में सरकार को व्यवस्थाओं पर ध्यान देना चाहिए। हरीश रावत ने कहा इस तरीके के मिस मैनेजमेंट के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति अपनानी होगी। उन्होंने सरकार से आग्रह किया है कि इस घटना को बड़ी चेतावनी के रूप में लिया जाए। पुलिस विभाग में ऐसे दक्ष ग्राउंड मैनेजमेंट वाले अधिकारियों और प्रशासन के अधिकारियों को ऐसे महत्वपूर्ण स्थान पर नियुक्त किया जाए। उन्होंने मृतकों के परिजनों के प्रति गहरी संवेदनाएं प्रकट की है। उन्होंने कहा घायलों को बचाने का हर संभव प्रयास होना चाहिए। उन्होंने घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की है। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष करन माहरा ने भी घटना पर दुख व्यक्त किया। उन्होंने कहा हरिद्वार मनसा देवी मंदिर में हुई घटना दुर्भाग्यपूर्ण है. उन्होंने कहा कांग्रेस महानगर अध्यक्ष अमन गर्ग कांग्रेस पार्षदों और कार्यकर्ताओं के साथ बचाव कार्यों में की जान से जुटे हुए हैं। माहरा ने सवाल उठाया कि इतनी बड़ी घटना आखिर कैसे घट गई? भीड़ प्रबंधन और सुरक्षा व्यवस्था नियंत्रण पर उन्होंने गंभीर सवाल खड़े किए। उन्होंने कहा क्या प्रशासन पहले से ही तैयार नहीं था? क्या इस हादसे को रोका नहीं जा सकता था? उन्होंने इस दुखद घटना पर अपनी संवेदनाएं व्यक्त करते हुए पीड़ित परिवारों के साथ अपनी सहानुभूति प्रकट की है। वहीं, कांग्रेस नेता प्रीतम सिंह ने भी हरिद्वार हादसे पर दुख जताया। उन्होंने एक्स पर लिखा हरिद्वार मनसा देवी मंदिर मार्ग पर हुए दर्दनाक हादसे में श्रद्धालुओं की मृत्यु का समाचार अत्यंत दु:खद है। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत पुण्यात्माओं को अपने श्रीचरणों में स्थान दें। शोकाकुल परिजनों को इस असीम दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

मनसा देवी की घटना दुर्भाग्यपूण: सतपाल महाराज

हरिद्वार । प्रदेश के कैबिनेट मंत्री और हरिद्वार के प्रभारी मंत्री सतपाल महाराज ने जनपद हरिद्वार स्थित मनसा देवी मंदिर की सीढ़ियों वाले मार्ग पर भगदड़ की घटना में 8 लोगों की मौत पर गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की है। प्रदेश के कैबिनेट मंत्री और हरिद्वार के प्रभारी मंत्री सतपाल महाराज ने रविवार को जनपद हरिद्वार स्थित मनसा देवी मंदिर की सीढ़ियों वाले मार्ग पर भगदड़ मचने से दुर्घटना में मृत 8 लोगों की मौत पर गहरी संवेदना व्यक्त की है। उन्होंने घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करते हुए उनके उचित इलाज के लिए प्रशासन एवं स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए हैं। महाराज ने कहा कि सरकार और स्थानीय प्रशासन पूरे घटनाक्रम पर अपनी पैनी नजर रखे हुए है और सरकार भगदड़ के कारणों की जांच करवायेगी।

सम्पादकीय

विकसित भारत का सारथी

कहा जाता है कि अगर किसी देश को आगे बढ़ना है, विकसित होना है, तो उसका युवा सशक्त और समर्थ होना चाहिए। विश्व में भारत ऐसा देश है, जहां सबसे अधिक युवा आबादी है। हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी कहते हैं कि अगर भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाना है, तो उसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका हमारी युवा शक्ति ही निभाएगी। देश के विकास की रफ्तार युवाओं की ऊर्जा, विचार और संकल्प से ही तय होती है। लेकिन आज राष्ट्र के सामने सबसे बड़ी चुनौती है, अपने युवाओं को नशे की लत से दूर रखना। वर्तमान में युवा वर्ग नशे के घेरे में आता जा रहा है। यह नशा न केवल उनके स्वास्थ्य बल्कि करियर, सपनों और देश की ताकत को भी प्रभावित कर रहा है। एक स्टडी के मुताबिक, भारत में 10 से 24 वर्ष की उम्र के हर 5 में से 1 युवा ने कभी न कभी ड्रग्स का सेवन किया है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) की रिपोर्ट के अनुसार, 8.5 लाख से अधिक बच्चे ड्रग्स की लत का शिकार हैं। ये आंकड़े बेहद डरावने और चिंतन योग्य हैं। ड्रग्स और अन्य नशीले पदार्थों के खात्मे के लिए भारत सरकार ने पिछले 11 वर्षों में कई प्रभावी कदम उठाए हैं। 2020 में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय ने नशा मुक्त भारत अभियान की शुरुआत की। नशे की लत को रोकने और पीड़ितों की सहायता के लिए सरकार ने राष्ट्रीय नशा मुक्ति केंद्र और आउटरीच-कम-ड्रॉप-इन सेंटर की स्थापना की। स्कूलों और कॉलेजों में जागरूकता अभियान चलाए गए। नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो ने ड्रग माफिया के विरुद्ध सशक्त ऑपरेशन्स किए। साथ ही, देशभर में युवाओं की काउंसलिंग हेतु हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर भी स्थापित किए गए। इसके अलावा विभिन्न राज्यों में भी स्थानीय प्रशासन, गैर-सरकारी संस्थाओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के सहयोग से नशे के विरुद्ध कई बड़े अभियान चलाए जा रहे हैं। भारत इस लड़ाई को और मजबूत बनाने के लिए लगातार प्रयासरत है। इसी कड़ी में मेरा भारत ने एक बड़ी पहल की है। बाबा काशी विश्वनाथ की धरती से 19 से 20 जुलाई तक युवा आध्यात्मिक समिट का आयोजन किया जा रहा है। इसका थीम होगा नशा मुक्त युवा फॉर विकसित भारत। वाराणसी के पावन घाटों पर आयोजित होने वाले इस समिट का उद्देश्य, एक ऐसी राष्ट्रीय नीति बनाना है, जो युवाओं के नेतृत्व में नशा मुक्ति अभियान को सशक्त बनाए। इस समिट में देशभर की 100 से अधिक आध्यात्मिक संस्थाओं के युवा प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया है। साथ ही स्वास्थ्य मंत्रालय, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय, नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो और अन्य महत्वपूर्ण संस्थाएं भी इसमें सहभागिता करेंगी। इसके माध्यम से युवाओं को एक ऐसा मंच मिलेगा, जहां वो अपनी आवाज़ को सरकार और नीति निर्माताओं तक पहुँचा सकेंगे। इस समिट में देश की नशे के विरुद्ध लड़ाई को मजबूत करने के लिए विभिन्न सेशन्स आयोजित किए जाएंगे। इसमें नशे की प्रवृत्ति, इसकी प्रकृति, प्रकार, पीड़ितों की जनसांख्यिकी, अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव और सरकार तथा मेरा भारत के युवा स्वयंसेवकों की भूमिका जैसे विषयों पर गहन विचार-विमर्श और चर्चा होगी। साथ ही नशे की लत से उबरने वाले युवाओं की प्रेरक कहानियां और उनके अनुभव भी साझा किए जाएंगे, ताकि अन्य युवा उनसे प्रेरणा ले सकें। अंत में एक काशी डिक्लेरेशन जारी किया जाएगा, जो अगले पांच वर्षों के लिए नशा मुक्ति अभियान का रोडमैप होगा। इसमें यह तय किया जाएगा कि युवाओं को किस प्रकार नशे से दूर रखा जाए, नशे की गिरफ्त में आए लोगों की कैसे सहायता की जाए और पूरे देश में जागरूकता अभियान को किस तरह तेज किया जाए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी हमेशा देश की अमृत पीढ़ी के सपनों का भारत बनाने की बात करते हैं। उनके विजन के अनुरूप, युवा मामले और खेल मंत्रालय द्वारा उठाया गया यह कदम, एक समग्र और प्रभावशाली पहल का उदाहरण बनेगा। यह पहल न केवल युवाओं को नशे से दूर रखने में मदद करेगी, बल्कि उन्हें राष्ट्र निर्माण की मुख्यधारा में भी सशक्त भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करेगी। देश को विकसित राष्ट्र बनाने की सबसे बड़ी जिम्मेदारी हमारी युवा शक्ति की है। काशी में आयोजित होने वाला युवा आध्यात्मिक समिट इस लक्ष्य की दिशा में केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय चेतना का प्रारंभ स्थल बनेगा। यह नशे के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी अभियान को नई दिशा और ऊर्जा देगा। साथ ही, युवाओं में नैतिक मूल्यों, सामाजिक ज़िम्मेदारी और आत्म-संयम का ऐसा भाव जागृत करेगा, जो न केवल उन्हें अपने जीवन में सार्थकता देगा, बल्कि देश को भी आत्मनिर्भर, सशक्त और विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करने का माध्यम बनेगा। काशी की पवित्र धरती से उठने वाली यह पुकार, हर युवा के मन में जागृति और देशभक्ति का नया प्रकाश भर देगी और यही संकल्प 2047 के विकसित भारत की मजबूत नींव बनेगा।

हरियाली तीज: परंपरा की जड़ें और आधुनिकता की डालियाँ

- प्रियंका सौरभ

हरियाली तीज केवल श्रृंगार, झूला और व्रत का पर्व नहीं, बल्कि भारतीय स्त्री के आत्मबल, प्रेम और प्रकृति से जुड़ाव का प्रतीक है। आधुनिकता की दौड़ में यह त्योहार भले ही प्रदर्शन का माध्यम बनता जा रहा हो, पर इसकी आत्मा अब भी स्त्री के मन, पर्यावरण और लोकसंस्कृति में जीवित है। यह पर्व रिश्तों में स्थायित्व, समाज में समरसता और जीवन में हरियाली लाने का संदेश देता है। आवश्यकता है इसे सादगी, सामूहिकता और संवेदना के साथ फिर से जीने की, ताकि परंपरा आधुनिकता के संग आगे बढ़े।

हरियाली तीज का नाम लेते ही आँखों के सामने एक चित्र उभरता है—हरा चूनर ओढ़े खेत, बारिश की बूंदों से भीगी धरती, झूलती बालाएं, मेंहदी रचे हाथ और लोकगीतों की सुमधुर गूंज। पर यह चित्र अब केवल स्मृति में रह गया है, क्योंकि आधुनिकता की तेज़ रफ्तार ने परंपराओं के रंगों को हल्का कर दिया है। फिर भी हरियाली तीज आज भी भारतीय स्त्रियों के मन में गहरे तक रची-बसी है। यह पर्व आज केवल धार्मिक या पारंपरिक नहीं, बल्कि सामाजिक, मानसिक और सांस्कृतिक संदर्भों में भी विशेष महत्व रखता है। हरियाली तीज वर्षा ऋतु में मनाया जाने वाला एक प्रमुख पर्व है, जो शिव-पार्वती के पुनर्मिलन की स्मृति में विवाहित महिलाओं द्वारा मनाया जाता है। यह श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया को आता है, जब आसमान बादलों से भर जाता है और धरती पर हरियाली बिछ जाती है। हरियाली तीज का मूल भाव प्रेम, समर्पण, सौंदर्य और प्रकृति के साथ तादात्म्य का है। पहले जहां इस पर्व को गाँवों और कस्बों में सामूहिक रूप से खुले वातावरण में मनाया जाता था, वहीं आज शहरी अपार्टमेंटों, वातानुकूलित हॉलों और सोशल मीडिया की चमक में इसकी आत्मा कहीं खोती जा रही है। प्रश्न यह नहीं है कि पर्व मनाया जा रहा है या नहीं, प्रश्न यह है कि हम किस भाव से उसे निभा रहे हैं। पहले यह त्योहार स्त्रियों को सालभर की व्यस्तता और परिश्रम से थोड़ी राहत देने वाला, उनके भावनात्मक संसार को सहेजने वाला एक सहज अवसर होता था। स्त्रियाँ बिना किसी दिखावे के, प्राकृतिक परिवेश में एक-दूसरे से मिलती थीं, अपने सुख-दुख साझा करती थीं, लोकगीतों में अपने अनुभवों को पिरोती थीं। लेकिन अब यह पर्व कहीं-कहीं 'सर्वश्रेष्ठ श्रृंगार प्रतियोगिता', 'तीज क्वीन' और 'सेल्फी विद स्विंग' जैसे आयोजनों में तब्दील हो गया है, जहाँ संवेदना की जगह प्रतियोगिता ने ले ली है। हरियाली तीज स्त्री मन के उस पक्ष को उजागर करता है जो प्रेम, प्रतीक्षा और पारिवारिक समर्पण से जुड़ा होता है। आज के दौर में जब रिश्ते त्वरित संवाद और क्षणिक भावनाओं में बदलते जा रहे हैं, तब यह पर्व स्थायित्व, आस्था और धैर्य का संदेश देता है। यह पर्व यह भी सिखाता है कि संबंधों को केवल अधिकार से नहीं, कर्तव्य और भावना से निभाया जाता है। पति की दीर्घायु के लिए व्रत रखना हो या शिव-पार्वती जैसे दांपत्य संबंधों की कल्पना, इन सबमें एक ऐसा भाव छिपा है जो स्त्री को त्याग का नहीं, बल्कि आत्मबल का प्रतीक बनाता है। आधुनिक संदर्भ में देखें तो यह पर्व कई नए अर्थों को जन्म देता है। जहां पहले तीज केवल विवाहित स्त्रियों तक सीमित थी, अब कई स्थानों पर इसे अविवाहित लड़कियाँ भी आत्मिक अनुभूति और सामूहिक संस्कृति के रूप में मनाने लगी हैं। कार्यरत महिलाओं के लिए यह पर्व अपने अस्तित्व और सांस्कृतिक पहचान से जुड़ने का एक माध्यम बनता जा रहा है। वही महिलाएं, जो दिनभर कार्यालयों में कंप्यूटर की स्क्रीन के सामने बैठी रहती हैं, तीज के अवसर पर झूला झूलते हुए कुछ पल के लिए प्रकृति के साथ जुड़ जाती हैं। यह जुड़ाव आज की मानसिक थकान और तनाव के दौर में एक भावनात्मक उपचार जैसा है।

परंतु आधुनिकता की यह यात्रा केवल सकारात्मक बदलाव नहीं लाती। तीज अब एक 'सोशल मीडिया इवेंट' बन गया है, जहाँ हर महिला को यह सोचकर श्रृंगार करना पड़ता है कि उसकी फोटो सबसे सुंदर दिखे। फेसबुक और इंस्टाग्राम पर #TeejLook, #GreenDressChallenge और #TeejVibes जैसे ट्रेंड त्योहार को ग्लैमर से तो भरते हैं, पर उसकी आत्मा को खोखला भी करते हैं। त्योहार अब मन की खुशी से ज़्यादा दिखावे की होड़ में शामिल हो गया है। यही कारण है कि त्योहार बीतने के बाद भी मन संतुष्ट नहीं होता, क्योंकि वह जुड़ाव, वह सामूहिकता, वह आत्मीयता अब केवल तस्वीरों में सीमित रह जाती है।

हरियाली तीज की सबसे सुंदर बात यह थी कि यह पर्व हमें प्रकृति के करीब ले जाता था। खेतों में लगे झूले, पेड़ों पर टंगे कागज़ के फूल, मिट्टी से बने शिव-पार्वती के स्वरूप — ये सब हमें याद दिलाते थे कि हम प्रकृति के ही अंश हैं। आज जब हम जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वॉर्मिंग, पेड़ों की कटाई और प्रदूषण जैसे संकटों से जूझ रहे हैं, तब तीज जैसे पर्व हमें पर्यावरण संरक्षण की चेतना दे सकते हैं। अगर हर तीज पर एक पेड़ लगाने की परंपरा शुरू की जाए, अगर बच्चों को झूला झुलाने के साथ-साथ पेड़ से प्रेम करना सिखाया जाए, तो यह पर्व केवल धार्मिक नहीं, पर्यावरणीय आंदोलन बन सकता है। तीज में महिलाएं लोकगीत गाती थीं, जिनमें नारी की पीड़ा, उसकी उम्मीदें, उसकी हंसी, और उसका समाज से संवाद छुपा होता था। आज वह लोकगीत मोबाइल की रिंगटोन बन चुके हैं या यूट्यूब के व्यूज तक सिमट गए हैं। हमें इन गीतों को फिर से जीवन में लाना होगा। नारी की आवाज़ को उसकी भाषा, उसकी धुन, और उसके लोकसंगीत में फिर से पिरोना होगा। यदि हम सच में महिला सशक्तिकरण की बात करते हैं तो इन सांस्कृतिक मंचों को पुनर्जीवित करना जरूरी है, क्योंकि यही स्त्रियों को आत्म-अभिव्यक्ति की सबसे स्वाभाविक ज़मीन देते हैं। आज जब महिलाएं शिक्षा, सेवा, राजनीति और विज्ञान के हर क्षेत्र में भागीदारी निभा रही हैं, तब यह आवश्यक है कि त्योहारों को भी उनके नए रूपों में स्वीकार किया जाए। तीज को केवल पारंपरिक श्रृंगार और व्रत तक सीमित न कर, उसे आत्मचिंतन, सांस्कृतिक संवाद और सामाजिक चेतना से जोड़ना होगा। तीज केवल घर की चारदीवारी में मनाया जाने वाला त्योहार नहीं होना चाहिए, बल्कि यह महिला जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण, लोकसंस्कृति संरक्षण और सामाजिक संवाद का अवसर बन सकता है। अगर एक महिला तीज के दिन वृक्षारोपण करे, कुपोषित बच्चों के लिए भोजन बांटे, घरेलू हिंसा के खिलाफ एक संवाद करे, तो वह इस पर्व को नई चेतना दे सकती है।

शहरीकरण और उपभोक्तावाद ने हमारे त्योहारों को उपहारों, महंगे लहंगे और इंस्टाग्राम-योग्य सजावटों में बदल दिया है। तीज अब रेडीमेड परिधानों, ब्यूटी पार्लरों और %फैशन शो विद झूला थीम% का केंद्र बन गई है। हम भूलते जा रहे हैं कि इस पर्व का सौंदर्य उसकी सादगी में था—माँ के हाथों से बुना गया हरा दुपट्टा, बहन द्वारा सजाया गया झूला, पड़ोसी की दी हुई मेंहदी। यही सादगी त्योहार को उत्सव बनाती थी, यही आत्मीयता इसे जीवंत बनाती थी। अगर आधुनिकता को अपनाते हुए हम सादगी और आत्मीयता को न छोड़ें तो यह पर्व और अधिक समृद्ध बन सकता है। हरियाली तीज स्त्री मन की वो कविता है, जिसे वह हर वर्ष प्रकृति के पन्नों पर लिखती है। यह पर्व बताता है कि स्त्री केवल त्याग की प्रतिमूर्ति नहीं, बल्कि सृजन की शक्ति है। जब वह झूला झूलती है, तो वह केवल आनंद नहीं लेती, वह समय से संवाद करती है—बीते हुए पलों से, आने वाले कल से। जब वह शिव-पार्वती की पूजा करती है, तो वह केवल धार्मिक कर्म नहीं करती, वह अपने भीतर की ऊर्जा, समर्पण और शक्ति को पहचानती है। और जब वह हरे वस्त्र पहनती है, तो वह केवल श्रृंगार नहीं करती, वह जीवन की हरियाली को अपनाती है। इसलिए ज़रूरत है कि हम हरियाली तीज को फिर से उसकी आत्मा के साथ जोड़ें। परंपरा और आधुनिकता को विरोधी ध्रुव नहीं, सहयात्री बनाएं। परंपराओं को संजोते हुए नई पीढ़ी को यह समझाएं कि त्योहार केवल कपड़े पहनने और फोटो खिंचवाने का अवसर नहीं, बल्कि जीवन के मूल मूल्यों को जीने का नाम है। अगर हम तीज के इस भाव को समझें, तो यह पर्व हमारे समाज को और भी सुंदर, समावेशी और संवेदनशील बना सकता है।

नीति आयोग द्वारा संचालित जन कल्याणकारी योजनाओं का डाटा पोर्टल पर समय से फीड किया जाए : जिलाधिकारी

हरिद्वार । नीति आयोग द्वारा विभिन्न विभागों के माध्यम से संचालित जन कल्याणकरी योजनाओं के संबंध में की गई प्रगति की समीक्षा बैठक जिलाधिकारी मयूर दीक्षित की अध्यक्षता में जिला कार्यालय सभागार में आयोजित की गई। बैठक में जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए है कि उनके माध्यम से जो भी कार्यक्रम एवं योजनाएं संचालित हो रही है,उनका सही आंकलन करते हुए पूर्ण जानकारी पोर्टल पर समय से फीड कराने के निर्देश दिए।

उन्होंने सभी अधिकारियों को निर्देश करते हुए कहा कि सभी अधिकारी आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए सही डाटा पोर्टल पर फीड कराए,डाटा में किसी भी प्रकार की कोई भिन्नता नहीं होनी चाहिए। आंकड़ों में भिन्नता पाए जाने पर संबंधित अधिकारी के विरुद्ध कड़ी करवाई अमल में कई जाएगी।

स्वास्थ्य विभाग के समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिए है कि महिलाओं एवं बच्चों के लिए संचालित जन कल्याणकारी योजनाओं का उन्हें हर हाल में उपलब्ध हो,उन्होंने कहा कि जनपद में कितने प्राइवेट प्रसव केंद्र है तथा कितने अल्ट्रासाउंड केंद्र है जिसके लिए उन्होंने पूर्ण विवरण उपलब्ध कराने के निर्देश दिए साथ ही उन्होंने अप्रैल से जून तक जन्मे मेल एवं फीमेल बच्चों की डाटा भी उपलब्ध कराने के निर्देश दिए।उन्होंने राजकीय चिकित्सालय एवं प्राइवेट चिकित्सालयों में हुए संस्थागत प्रसव का डाटा भी उपलब्ध कराने के निर्देश दिए।

जिलाधिकारी ने बाल विकास की समीक्षा के दौरान आंगनवाड़ी में अध्ययनरत छात्र छात्राओं का मेल-फीमेल डाटा भी उपलब्ध कराने के निर्देश दिए साथ ही उन्होंने यह भी निर्देश दिए है कि किराए के भवन पर संचालित हो रहे आंगनवाड़ी केंद्रों में बिजली ,पानी,शौचालय की उपलब्धता के संबंध में सूची उपलब्ध करने के निर्देश दिए। उन्होंने मुख्य शिक्षा अधिकारी को निर्देश दिए है कि छात्र एवं छात्राओं के लिए लाइब्रेरी एवं कंप्यूटर कक्ष बनाने के निर्देश दिए जिसमे कंप्यूटर का उपयोग छात्र एवं छात्राओं के माध्यम से हो,अन्य किसी कर्मचारी द्वारा उसका उपयोग न किया जाए।

उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए है कि उनके द्वारा निर्देश दिए है कि नीति आयोग के तहत उनके द्वार जी भी योजनाएं संचालित हो रही है उन योजनाओं का सफल क्रियान्वित करते हुए आम जन मानस को उन योजनाओं का लाभ समय से उपलब्ध कराना सुनिश्चित करे ।योजनाओं के संचालन में किसी भी प्रकार से कोई लापरवाही एवं कोई शिथिलता न बरती जाए।

जनपद में जल संरक्षण एवं संवर्धन के लिए स्क्रयोजना के तहत किए जा रहे कार्यों की गई समीक्षा।

जिलाधिकारी ने जल संरक्षण एवं संवर्धन के लिए जो भी योजनाएं विभिन्न विभागों के माध्यम से संचालित हो रही है उनकी समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए है कि निर्माणाधीन योजनाओं का कार्य गुणवत्ता के साथ समय से कराया जाए तथा जो धनराशि उन्हें स्वीकृत की गई है उसका

तत्परता से व्यय करना सुनिश्चित करे।

उन्होंने सिंचाई,लघु सिंचाई एवं खंड विकास अधिकारी बहादराबाद को आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए उनके माध्यम से जो भी तालाब /रिचार्ज पीट बनाए जाने के कार्य किए जा रहे है उससे शीघ्रता से पूर्ण करना सुनिश्चित करे ।

इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी आकांक्षा कोण्डे,मुख्य चिकित्सा अधिकारी आर के सिंह,परियोजना निर्देशक के एन तिवारी,जिला विकास अधिकारी वेद प्रकाश, मुख्य कृषि अधिकारी गोपाल भंडारी,मुख्य शिक्षा अधिकारी केके गुप्ता,जिला अर्थ संख्या आधिकारी नलिनी ध्यानी, खंड विकास अधिकारी बहादराबाद मानस मित्तल, खंड विकास अधिकारी रुड़की सुमन कोटियाल जिला पंचायत राज अधिकारी अतुल प्रताप सिंह,जिला कार्यक्रम बाल विकास अधिकारी सुलेखा सहगल,आपदा प्रबंधन अधिकारी मीरा रावत सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

मां गंगा को स्वच्छ रखने के लिए 26 जुलाई को हरिद्वार के सभी घाटों में चलाया जाएगा विशेष स्वच्छता अभियान

हरिद्वार । मां गंगा को स्वच्छ एव निर्मल बने रखने के लिए गंगा घाटों की सफाई व्यवस्था के लिए 26 जुलाई को प्रात 7ः30 बजे विशेष स्वच्छता अभियान चलाए जाएगा। स्वच्छ अभियान को सफल बनाने के लिए जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जोनल एवं नोडल अधिकारियों के साथ एचआरडीए सभागार में बैठक आयोजित की गई।

बैठक में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रमेंद्र सिंह डोभाल, उपाध्यक्ष एचआरडीए अंशुल सिंह ,मुख्य विकास अधिकारी आकांक्षा कोण्डे, मुख्य नगर आयुक्त नंदन कुमार एवं डीएफओ वैभव कुमार सिंह ने भी शिरकत की ।

बैठक में जिलाधिकारी ने सभी जोनल एवं नोडल अधिकारियों को निर्देश दिए है कि 26 जुलाई को प्रातः 7ः30 बजे से विशेष स्वच्छता अभियान मुख्य घाटों एवं कांवड यात्रा मार्ग पर चलाया जाएगा,इसके लिए सभी अधिकारी सौंपी गई दायित्वों का निर्वहन आपसी समन्वय के साथ करे तथा इस विशेष स्वच्छ अभियान में आम जन,जनप्रतिनिधियों, स्वयंसेवी संगठनों ,संस्थाओं,व्यापार मंडल,संत समाज का भी सहयोग लिए जाए। उन्होंने कहा कि जिस तरह से कांवड़ मेले को सकुशल एवं सफलतापूर्वक सभी के सहयोग से संपन्न हुआ है,इसी प्रकार से गंगा घाटों की विशेष सफाई अभियान में सभी अपना पूर्ण सहयोग दे।

जिलाधिकारी ने स्वच्छता अभियान को सफल बनाने के लिए सहयोग की अपील की जिससे कि मां गंगा के सभी घाट स्वच्छ एवं साफ रहे। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रमेंद्र सिंह डोभाल ने कहा कि मां गंगा की स्वच्छता को बनाए रखने के लिए विशेष स्वच्छता अभियान में भी पुलिस की ओर से पूर्ण सहयोग किया जाएगा तथा जिला प्रशासन,पुलिस प्रशासन,नगर निगम,आम जन, व्यापार मंडल,संत समाज ,स्वयं सेवी संस्थाओं और जनप्रतिनिधियों के सहयोग से स्वच्छता अभियान सफल बनाया जायेगा।उन्होंने सभी को इस अभियान में शामिल होने की अपील करने की । उपाध्यक्ष एचआरडीए अंशुल सिंह ने स्वच्छता अभियान को सफल बनाने के लिए सभी नोडल अधिकारियों को निर्देश दिए है कि स्वच्छता अभियान की सफलता के लिए इस अभियान में शामिल होने वाले को मास्क,ग्लब्स एवं कूड़ा कचरा एकत्रित करने के लिए बैग प्राप्त कर ले। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी दीपेंद्र सिंह नेगी,अपर जिलाधिकारी फिंचाराम चौहान,मुख्य चिकित्सा अधिकारी आरके सिंह,एसपी सिटी पंकज गैरोला,सचिव एचआरडीए मनीष कुमार,उप जिलाधिकारी जितेंद्र कुमार,आपदा प्रबंधन अधिकारी मीरा रावत सहित विभिन्न आश्रमों के प्रतिनिधि, समाजसेवी,व्यापार मंडल के प्रतिनिधि आदि भी मौजूद रहे।

"कॉवड़ मेला"- 2025: स्वयं सहायता समूहों ने किया अच्छा व्यवसाय

हरिद्वार । हरिद्वार में दिनांक 11 जुलाई से 23 जुलाई 2025 तक चले प्रसिद्ध 'कॉचड़ मेला' के दौरान स्वयं सहायता समूहों ने अच्छा खासा कारोबार किया और अपनी आय में वृद्धि की, दिनांक 23 जुलाई 2025 तक सभी स्ऑल्स में कुल मिलाकर 41 लाख 57 हजार 500 (41,57,500) के लगभग बिकी की गई, जनपद हरिद्वार के सभी 6 विकासखण्डों के 21 कलस्टर लेवल फेडरेशन (सी0एल0एफ0) के 33 से अधिक ग्राम संगठनों के 48 स्वयं सहायता समूहों द्वारा विभिन्न स्थानों पर कैंटीन, जुस, पानी, फल, वाय नाश्ता, भोजन, जूट और कपडे के बैग, कपडों, भोला कुर्ते और स्टॉल, कॉवड बनाने, आदि से सम्बन्धित स्टॉल लगाये गये। लक्सर विकासखण्ड के अन्तर्गत आदर्श सी.एल एफ. के राधे-राधे ग्राम संगठन, ग्राम पंचायत अकोडा कलां के बेबी स्वयं सहायता समूह से करिश्मा द्वारा हर-की-पैडी पर घटाघर के निकट काँवंड बनाने की स्टॉल लगाई गई थी, इस क्षेत्र में दुकान मिलना आसान नहीं है, करिश्मा ने किराये पर, कावड मेला अवधि के लिए दुकान ली और उनकी काफी अच्छी बिकी हुई, उन्होंने कावड़ और उससे संबंधित अन्य वस्तुओं की बिक्री कर सबसे अधिक बिकी करने वाले स्वयं सहायता समूह/सदस्य के रूप में नाम दर्ज कराया, कांवड़ मेला अवधि में करिश्मा ने रू0 5,85,800/- की बिकी की।

लक्सर विकासखण्ड से ही एक अन्य सी.एल.एफ. प्रार्थना सी.एल.एफ. से हीरा ग्राम संगठन के एकता स्वयं सहायता समूह, ग्राम सीधडू से सरिता और रजनी ने भी हर-की-पैड़ी घंटाघर के निकट किराये पर दुकान लेकर भोले बाबा की ड्रेस की स्टॉल लगाई, सरिता ने रू0 3,49,600 और रजनी ने रू0 3,45,900/- की बिकी की और करिश्मा के बाद कमशः दुसरे और तीसरे नम्बर पर रही। नारसन विकासखण्ड से राजकुमार स्वयं सहायता समूह, ग्राम थिथोला ने हैंडलूम वस्त्र और कॉवड मेला से संबंधित वस्त्रों की स्टॉल लगाई और रू0 1,73,500 की बिकी कर चौथे स्थान पर रहे। खानपुर विकासखण्ड के अन्तर्गत पुरकाजी मार्ग पर खानपुर के उजाला सी.एल.एफ. के उत्कर्ष स्वयं सहायता समूह द्वारा चलाये जा रहे उत्कर्ष रेस्टोरेंट द्वारा इस अवधि में रू0 1,67,800 की बिकी की गई और पांचवे स्थान पर रहे। बहादराबाद विकासखण्ड के अन्तर्गत श्रद्वा सी. एल.एफ. के उजाला ग्राम संगठन के राधे राधे स्वयं सहायता समूह, इब्राहिमपुर, द्वारा श्री शनि मन्दिर, बहादराबाद के निकट कैटीन स्टॉल लगाकर रू0 1,53,171 की बिकी की गई, श्रद्धा सी.एल.एफ. के आस्था ग्राम संगठन, बोंगला के भीम राव स्वयं सहायता समूह द्वारा टोल टैक्स, बहादराबाद के निकट फूड स्टॉल लगाकर रू0 1,31,840 की बिक्री की गई. श्रद्धा सी.एल.एफ. से ही रावली महदूद ग्राम पंचायत के मुस्कान ग्राम संगठन के कनिका स्वय सहायता समूह द्वारा संस्कृत महाविधालय, बहादराबाद के निकट स्टॉल लगाकर रू0 1,07,991 की बिकी की गई। इसके अलावा रू0 60,000 से 1,00,000 के बीच बिकी दर्ज कराने वाले स्वयं सहायता समूहों में बहादराबाद के अभिनन्दन सी. एल एफ. के अन्तर्गत ग्राम पंचायतों गाजीवाली के स्वरोजगार ग्राम संगठन के श्याम स्वयं सहायता समूह ने ललतारो पुल के निकट कपड़ों की स्टॉल से रू0 95,320 की बिकी की. भगवानपुर के मंगलमय सी.एल.एफ. के अन्तर्गत ग्राम पंचायत सरठेड़ी के देवभूमि ग्राम संगठन के बुद्ध भगवान स्वयं सहायता समूह द्वारा तांशीपुर में फूड स्टॉल लगाकर रू0 60,580 की बिकी की, देवभूमि ग्राम संगठन के ही शिव स्वयं सहायता समूह ने भी तांशीपुर में फूड स्टॉल लगाकर रू0 60,330 की बिकी की। रूडकी विकासखण्ड के अन्तर्गत वरदान सी.एल.एफ. के शगुन ग्राम संगठन के एकता स्वयं सहायता समूह, ग्राम पंचायत निजामपुर पनियाली द्वारा पुरकाजी में फूड स्टॉल लगाकर रू0 60,850 की बिकी की।

हरिद्वार में 6परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित होगी उत्तराखण्ड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा

हरिद्वार । उपजिलाधिकारी / प्रभारी नगर मजिस्ट्रेट हरिद्वार जितेंद्र कुमार ने अवगत कराया कि उत्तराखण्ड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग द्वारा दिनांक 27 जुलाई 2025 रविवार को आयोजित होने वाली समीक्षा अधिकारी एवं सहायक समीक्षा अधिकारी के पदों की लिखित प्रतियोगी परीक्षा) एकाकी पाली पूर्वाह्न 10.00 बजे से 01.00 बजे तक जनपद हरिद्वार के 6 परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित की जानी है। केन्द्रों पर परीक्षा को नकल विहीन, पारदर्शिता, सुव्यवस्थित, निर्विघ्न एवं शांति पूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने तथा कानून व्यवस्था बनाये रखने की दृष्टि से परीक्षा केन्द्रों के आस - पास 200 मीटर की परिधि में निषेधाज्ञा 163 लागू की जाती है। परीक्षा 6 केंद्रों में आयोजित होगी जिसमें परीक्षा भवन , उत्तराखंड पब्लिक सर्विस कमिशन हरिद्वार, एचईसी ग्रुप ऑफ़ इंस्टिट्यूशन लक्सर रोड जगजीतपुर हरिद्वार, श्री गुरु राम राय पब्लिक स्कूल लक्सर रोड जगजीतपुर हरिद्वार, शांति मेमोरियल पब्लिक स्कूल लक्सर रोड जगजीतपुर कनखल हरिद्वार, ज्वालापुर इंटर कॉलेज नियर ज्वालापुर रेलवे स्टेशन हरिद्वार, राष्ट्रीय इंटर कॉलेज सीतापुर हरिद्वार में आयोजित होगी। जितेंद्र कुमार उप जिलाधिकारी/प्रभारी नगर मजिस्ट्रेट हरिद्वार ने अवगत कराया कि परीक्षा को शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने के लिए भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा-163 के प्राविधानों के तहत प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुये निषेधाज्ञा पारित की जाती है। उन्होंने हरिद्वार नगर क्षेत्र के परीक्षा केन्द्रों के आस-पास की 200 मीटर की सीमा के अन्तर्गत जिला मजिस्ट्रेट हरिद्वार अथवा अपर जिला मजिस्ट्रेट हरिद्वार अथवा उनके पूर्वानुमति के बिना पांच या पांच से अधिक व्यक्ति समूह के रूप में एकत्रित नहीं होंगे और न ही कोई सार्वजनिक सभा करेंगे और न ही जुलूस आदि निकालेंगे। कोई भी व्यक्ति उपरोक्त परीक्षा केन्द्रों के आस पास अपने किसी कार्यक्रम द्वारा जन भावनाओं को किसी प्रकार से नहीं भड़काएगा और कोई ऐसा कार्य नहीं करेगा जिससे सार्वजनिक लोक शांति भंग होना सम्भावित हो हरिद्वार नगर क्षेत्र के उपरोक्त परीक्षा केन्द्रों पर एवं उसके आस-पास की 200 मीटर की परिधि में किसी प्रकार का कोई धरना-प्रदर्शन आदि नहीं किया जाएगा।

शिव का वैदिक स्वरूप

-अशोक "प्रवृद्ध"

वैदिक मतानुसार परमात्मा के अनेक गुण हैं। अनेक गुणों के कारण ईश्वर के अनंत नाम हैं। परमात्मा के अनंत नामों में से एक नाम शिव है। शिव निराकार, अजन्मा, सर्वत्र व्याप्त, सर्वशक्तिमान, सृष्टि, पृथ्वी के रचयिता हैं। लेकिन वर्तमान में उन्हें वैदिक मत के विरुद्ध देखा जाता है और कहा जाता है कि शिव का हिमालय पर्वत में निवास है। उनका मूर्ति अथवा लिंग रूप में पूजा- अर्चना, आराधना- उपासना, जलाभिषेक आदि किया जाता है। लेकिन यजुर्वेद 40/8 में परमात्मा के सम्बन्ध में कहा गया है- स परि+अगात। अर्थात ईश्वर सर्वव्यापक है। इस प्रकार स्पष्ट है कि ईश्वर केवल पर्वत पर नहीं, वरन ईश्वर का सर्वत्र वास है। तैत्तिरीयोपनिषद् में कहा गया है-

तत् सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्।

अर्थात- ईश्वर ने सृष्टि रची और फिर वह कण-कण में समा गया। सबके रक्षक, सबके दाता ईश्वर के अनन्त गुणों में से यह गुण ईश्वर का सर्वव्यापक होना उसका स्वाभाविक गुण है।

वैदिक मतानुसार इस संपूर्ण ब्रह्मांड में जो एक पूजनीय देव है, वह निराकार, सृष्टि रचयिता, सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान परमेश्वर ही है। इसके समान अन्य कोई देवता नहीं है। ऋग्वेद 1/81/5 में कहा गया है- हे ईश्वर! तेरे समान न कोई हुआ और न कोई होगा। जिसने आकाश, सूर्य आदि सब जगत को रच के रक्षित किया है, जो कण-कण में व्यापक है और जो जन्म तथा मृत्यु से परे है, उस एक परमेश्वर से अधिक कोई अन्य या कुछ और कैसे हो सकता है? इसलिए इस परमेश्वर की उपासना को छोड़कर अन्य किसी की उपासना ग्रहण मत करो। इसी प्रकार

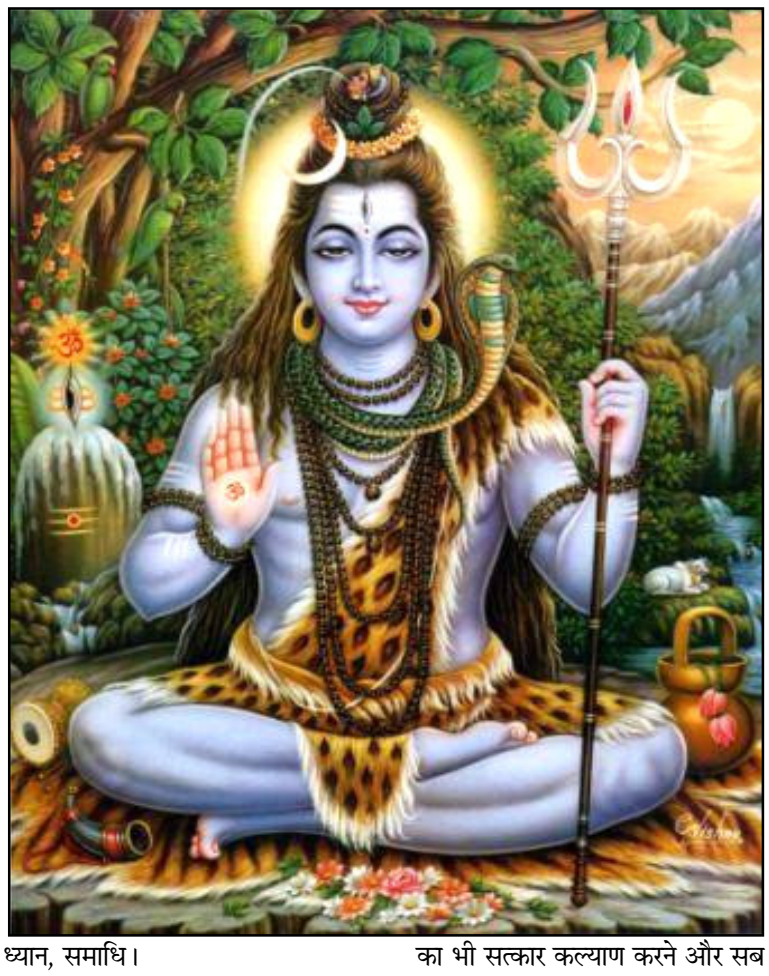

यजुर्वेद मंत्र 40/8 में कहा है कि वह सबका पूजनीय परमेश्वर सर्वज्ञ, सर्वत्र, निराकार, शुद्ध,

पाप-पुण्य आदि कर्म बंधन से रहित, सबके मन की जानने वाला है और इस परमेश्वर से ही चारों वेदों का ज्ञान उत्पन्न हुआ है। यजुर्वेद के मंत्र 7/4 के अनुसार ईश्वर से ही अष्टांग योग विद्या उत्पन्न हुई है, जिसका वर्णन वेदों में है। ऋषि- मुनियों एवं याज्ञवल्क्य ऋषि की वैदिक उक्ति है-

हिरण्यगर्भ: योगस्य वक्ता।

अर्थात- ज्योतिस्वरूप परमेश्वर ही योग विद्या का उपदेशक है, अन्य कोई नहीं।

प्राचीन ऋषि- मुनियों ने वेदों से ही इस विद्या को सीखकर किया आगे अपने शिष्यों को उपदेश किया, जो आज तक चला आ रहा है। पतंजलि ऋषि कृत योग शास्त्र 2/29 में योग विद्या के इन आठ अंगों का उपदेश है- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।

महाभारत काल तक तो यह सब कुछ ठीक- ठाक चल रहा था और प्रत्येक ऋषि- मुनि, योगी इस ईश्वर से उत्पन्न योग विद्या का परंपरागत अभ्यास करके ईश्वर की उपासना करते हुए शब्द ब्रह्म अर्थात वेद और पर ब्रह्म अर्थात ईश्वर को प्राप्त करते रहे, परंतु महाभारत युद्ध के पश्चात वेद विद्या का सूर्य अस्त हो गया, लोग वेद की सत्य ज्ञान से वंचित हो गए और मनुष्यों ने वेद विरुद्ध अपनी सुविधानुसार पूजा -पाठ के स्वयं अनेक मार्ग बना लिए, अनेक पंथ, मत, मजहब बना लिए। वैदिक ज्ञान, वैराग्य व ईश्वर भक्ति को मनुष्य ने मोहवश छोड़ दिया और वेद के विरुद्ध अनेक नए-नए पंथों की कल्पना कर ली। इसलिए वर्तमान में जो शिव हैं, उनको निराकार, पथ्वी रचयिता परमेश्वर के रूप में नहीं देखा जाता, बल्कि उन्हें साकार, पार्वती पति, कैलाशाधिपति, योगी आदि विभिन्न रूपों और नामों के अनुसार जाना जाता है। वैदिक संस्कृति का अध्ययन न करने के कारण शिव के वास्तविक वैदिक स्वरूप को लोग भूल गए। शिव का वैदिक अर्थ है कल्याणकारी। ईश्वर के अतिरिक्त संसार का कल्याण, रक्षा एवं पालन-पोषण करने वाला अन्य कोई नहीं हो सकता। वैदिकों के नित्यप्रति के संध्या- उपासना में प्रयुक्त होने वाली मंत्र यजुर्वेद 16/41 में परम पिता परमेश्वर का स्मरण करते हुए एक ही साथ शंभव, मयोभव, शंकर, मयस्कर, शिव, शिवतर आदि शब्द एक ही परमात्मा के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुए हैं-

नम: शम्भवाय च मयोभवाय च नम:
शंकराय च मयस्कराय च नम:
शिवाय च शिवतराय च।। -यजुर्वेद 16/41

अर्थात- जो मनुष्य सुख को प्राप्त कराने वाले परमेश्वर और सुखप्राप्ति के हेतु विद्वान का भी सत्कार कल्याण करने और सब प्राणियों को सुख पहुंचाने वाले का भी सत्कार मंगलकारी और अत्यन्त मंगलस्वरूप पुरुष का भी सत्कार करते हैं, वे कल्याण को प्राप्त होते हैं।

वेदों में ईश्वर को उनके गुणों और कर्मों के अनुसार बताया है।
यजुर्वेद 3/60 में कहा है-

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। -यजुर्वेद 3/60

अर्थात- विविध ज्ञान भण्डार, विद्यात्रयी के आगार, सुरक्षित आत्मबल के वर्धक परमात्मा का यजन करें। जिस प्रकार पक जाने पर खरबूजा अपने डण्ठल से स्वत: ही अलग हो जाता है वैसे ही हम इस मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो जायें, मोक्ष से न छूटें। यजुर्वेद के सोलहवें अध्याय में शिव के वैदिक स्वरूप का अत्यंत सूक्ष्म वर्णन अंकित है। यजुर्वेद 16/2 में भी ईश्वर के गुणों और कर्मों का वर्णन करते हुए कहा गया है-

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।। -यजुर्वेद 16/2

अर्थात- हे मेघ व सत्य उपदेश से सुख पहुंचाने वाले दुष्टों को भय और श्रेष्ठों के लिए सुखकारी शिक्षक विद्वन्! जो आप की घोर उपद्रव से रहित सत्य धर्मों को प्रकाशित करने वाली कल्याणकारिणी देह व विस्तृत उपदेश रूप नीति है उस अत्यन्त सुख प्राप्त करने वाली देह व विस्तृत उपदेश की नीति से हम लोगों को आप सब ओर से शीघ्र शिक्षा कीजिए।

यजुर्वेद 16/5 में परमात्मा के भिषक रूप का वर्णन करते हुए कहा है-

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव।। -यजुर्वेद 16/5

अर्थात- हे रुद्र रोगनाशक वैद्य! जो मुख्य विद्वानों में प्रसिद्ध सबसे उत्तम कक्षा के वैद्यकशास्त्र को पढ़ाने तथा निदान आदि को जान के रोगों को निवृत्त करने वाले आप सब सर्प के तुल्य प्राणान्त करने वाले रोगों को निश्चय से औषधियों से हटाते हुए अधिक उपदेश करें सो आप सब नीच गति को पहुंचाने वाली रोगकारिणी औषधि अथवा व्यभिचारिणी स्त्रियों को दूर कीजिए। यजुर्वेद 16/49 में भी शिव के भिषक रूप के सम्बन्ध में कहा है -

या ते रुद्र शिवा तनू: शिवा विश्वाहा भेषजी।
शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे।। -यजुर्वेद 16/49

अर्थात- हे राजा के वैद्य तू जो तेरी कल्याण करने वाली देह अथवा देखने में प्रिय औषधियों के तुल्य रोगनाशक और रोगी को सुखदायी पीड़ा हरने वाली विस्तारयुक्त नीति से जीने के लिए सब दिन हम को सुख कर।

वेदों की भांति ही उपनिषदों में भी शिव की महिमा बढ़- चढ़कर गाई गई है-

स ब्रह्मा स विष्णुः स रुद्रस्सः शिवस्सोऽक्षरस्सः परमः स्वराट्।
स इन्द्रस्सः कालाग्निस्स चन्द्रमाः।। -कैवल्योपनिषद 1/8

अर्थात- वह जगत का निर्माता, पालनकर्ता, दण्ड देने वाला, कल्याण करने वाला, विनाश को न प्राप्त होने वाला, सर्वोपरि, शासक, ऐश्वर्यवान, काल का भी काल, शान्ति और प्रकाश देने वाला है।

माण्डूक्य उपनिषद में शिव का शान्त और आनन्दमय के रूप अर्थ में वर्णन करते हुए कहा गया है-

प्रपंचोपशमं शान्तं शिवमद्वैतम् चतुर्थं मन्यन्ते स आत्मा स विज्ञेय:।।

-माण्डूक्य उपनिषद 7

अर्थात- प्रपंच जाग्रतादि अवस्थायें जहां शान्त हो जाती हैं, शान्त आनन्दमय अतुलनीय चौथा तुरीयपाद मानते हैं वह आत्मा है और जानने के योग्य है।

श्वेताश्वेत्तर उपनिषद 4/14 में कहा है-

सूक्ष्मातिसूक्ष्मं कलिलस्य मध्ये विश्वस्य सृष्टारमनेकरुपम्।

विश्वस्यैकं परिवेष्टितारं ज्ञात्वा शिवं शान्तिमत्यन्तमेति।। -श्वेताश्वेत्तर 4/14

अर्थात- परमात्मा अत्यन्त सूक्ष्म है, हृदय के मध्य में विराजमान है, अखिल विश्व की रचना अनेक रूपों में करता है। वह अकेला अनन्त विश्व में सब ओर व्याप्त है। उसी कल्याणकारी परमेश्वर को जानने पर स्थाई रूप से मानव परम शान्ति को प्राप्त होता है।

श्वेताश्वेत्तर उपनिषद 6/9 में कहा है-

नचेशिता नैव च तस्य लिङ्गम्।। -श्वेताश्वेत्तर उपनिषद 6/9

अर्थात- उस शिव का कोई नियन्ता नहीं और न उसका कोई लिंग यहवा निशान है।

योगदर्शन1/1/4 में परमात्मा के सम्बन्ध में कहा है-

क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्ट: पुरुषविशेष ईश्वर: ।।- योगदर्शन1/1/24

अर्थात- जो अविद्यादि क्लेश, कुशल, अकुशल, इष्ट, अनिष्ट और मिश्र फलदायक कर्मों की वासना से रहित है, वह सब जीवों से विशेष ईश्वर कहाता है। ईश्वर को प्राचीन गुरुओं का भी गुरु बताते हुए योगदर्शन1/1/26 में कहा गया है- स एष पूर्वेषामपि गुरु: कालेनानवच्छेदात्।। -योगदर्शन1/1/24

अर्थात- वह ईश्वर प्राचीन गुरुओं का भी गुरु है। उसमें भूत भविष्यत और वर्तमान काल का कुछ भी सम्बन्ध नहीं है,क्योंकि वह अजर, अमर नित्य है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती विरचित सत्यार्थप्रकाश में निराकार शिवादि नामों की व्याख्या करते हुए कहा गया है- जो दुष्ट कर्म करनेहारों को रुलाता है, इससे परमेश्वर का नाम रुद्र है। यजुर्वेद के ब्राह्मण के वचन के अनुसार जीव जिस का मन से ध्यान करता उसको वाणी से बोलता, जिस को वाणी जे बोलता, उसको कर्म से करता, जिसको कर्म से करता उसी को प्राप्त होता है। इससे सिद्ध है कि जो जीव जैसा कर्म करता है वैसा ही फल पाता है। जब दुष्ट कर्म करने वाले जीव ईश्वर की न्यायरूपी व्यवस्था से दु:खरूप फल पाते, तब रोते हैं और इसी प्रकार ईश्वर उनको रुलाता है, इसलिए परमेश्वर का नाम रूद्र है। जो कल्याण अर्थात सुख का करनेहारा है, इससे उस ईश्वर का नाम शंकर है। जो महान देवों का देव अर्थात विद्वानों का भी विद्वान, सूर्यादि पदार्थों का प्रकाशक है, इसलिए उस परमात्मा का नाम महादेव है। जो कल्याणस्वरूप और कल्याण करनेहारा है, इसलिए उस परमेश्वर का नाम शिव है। वेदों में सर्वत्र एकेश्वरवाद का ही समर्थन किया गया है। वेद में निराकार शिव का ही वर्णन है। ईश्वर के अनगिनत गुण होने के कारण अनगिनत नाम है। शिव भी इसी प्रकार से ईश्वर का एक नाम है। इस निराकार शिव की स्तुति, प्रार्थना एवं उपासना करना ही श्रेयस्कर है। इसीलिए ज्ञानी जन शांति उत्पन्न करने वाले मंगलकारी और अत्यंत मंगल स्वरूप परमेश्वर को नमन करते नहीं थकते हैं, और कल्याण को प्राप्त करते हैं। भगवान शिव सबका मंगल करें।

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भी भारत की कूटनीतिक जीत

गिरीश पांडे

एससीओ और क्वाड के बाद एक बार फिर 6-7 जुलाई 2025 को ब्राजील के रियो डि जिनेरियो में आयोजित दो दिवसीय 17वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम हुए आतंकवादी घटना की गूंज सुनाई दी। उल्लेखनीय है कि लगभग 15 दिनों के भीतर ये तीनों सम्मेलन आयोजित किए गए और भारत ने ऑपरेशन सिन्दूर के बाद पहली बार इन सम्मेलनों में भाग लिया था। इस बार ब्रिक्स सम्मेलन ब्राजील की मेजबानी में हुआ, जिसमें पुराने 5 देशों (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका) के अलावा नये सदस्य देशों मिस्त्र, इथियोपिया, ईरान, यूएई और इंडोनेशिया ने हिस्सा लिया। ब्राजील ने 1 जनवरी, 2025 को ब्रिक्स की अध्यक्षता संभाली थी। इस बार की थीम रही-%समावेशी और टिकाऊ वैंकि शासन के लिए ग्लोबल साउथ का सहयोग मजबूत करना' हालांकि, चीन के किगदाओ शहर में आयोजित एससीओ के रक्षा मंत्रियों की बैठक में भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने साझा बयान में पहलगाम की घटना का उल्लेख न होने की वजह से उस पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया था। इसलिए वह बयान जारी नहीं हो सका, लेकिन क्वाड के विदेश मंत्रियों की अमेरिका में आयोजित बैठक के बाद क्वाड के साझा बयान में पहलगाम साजिशकर्ताओं, हमलावरों और फंडिंग करने वालों को सजा दिलाने की मांग की गई और संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देशों से आह्वान किया गया है कि वे जिम्मेदार लोगों को न्याय के कठघरे में लाने के लिए अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत मिलकर काम करें। निश्चित तौर पर एससीओ, क्वाड तथा ब्रिक्स के शिखर सम्मेलन भारत के लिए जहां कूटनीतिक जीत है, वहीं पाकिस्तान और चीन के लिए एक झटका क्योंकि आतंकवाद के मुद्दे पर ये दोनों देश बेनकाब हुए हैं।

ब्रिक्स देशों के नेताओं ने आतंकवाद के सभी रूपों और अभिव्यक्तियों से निपटने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए ब्रिक्स घोषणा-पत्र में 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले की कड़े शब्दों में निंदा की है। यही नहीं, ब्रिक्स नेताओं ने आतंकवादियों की सीमापार आवाजाही, इसके वित्त-पोषण और सुरक्षित ठिकानों सहित सभी रूपों तथा अभिव्यक्तियों में आतंकवाद से निपटने के लिए भी अपनी वचनबद्धता दोहराई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आतंकवाद को मानवता के समक्ष सर्वाधिक गंभीर चुनौती बताते हुए कहा कि आतंकवाद के शिकार लोगों और इसे शह देने वालों को एक स्तर पर नहीं रखा जा सकता। प्रधानमंत्री ने कहा कि आतंकवादियों पर प्रतिबंध लगाने में कोई हिचक नहीं होनी चाहिए। मोदी का यह कथन महत्त्वपूर्ण है कि पहलगाम घटना भारत की आत्मा, पहचान और सम्मान पर घातक हमला था, आगे उन्होंने यह भी कहा कि यह केवल भारत पर किया गया हमला नहीं था, बल्कि पूरे मानवता पर किया गया प्रहार था। आतंकवाद की बर्बरता पर जीरो टॉलरेंस की मांग करते हुए उन्होंने सूचित किया कि आतंकवादी संगठनों पर कड़ी पाबंदी लगाई जानी चाहिए। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि भारत हमेशा संवाद और राजनीतिक मार्ग द्वारा ही अंतरराष्ट्रीय मसलों के समाधान पर अमल करेगा, जिससे वैंकि शांति बनी रहे। इसके अलावा, मोदी ने ब्रिक्स साझेदार देशों के साथ %बहुपक्षवाद, आर्थिक-वित्तीय मामलों और ंिआर्टफशियल इंटेलिजेंस' पर आयोजित संपर्क सत्र में भाग लेते हुए अंतरराष्ट्रीय सहयोग, बहुध्रुवीय और समावेशी वि व्यवस्था के निर्माण पर बल दिया। जहां तक आतंकवाद का प्रश्न है, अभी तक चीन ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अपने वीटो का प्रयोग पाकिस्तान स्थित आतंकवादियों को बचाने के लिए ही किया है। अब जिस प्रकार से एससीओ, क्वाड तथा ब्रिक्स में आतंकवाद को समूल नाश करने की प्रतिबद्धता सदस्य देशों ने व्यक्त की है, देखने की बात होगी कि क्या चीन का भी इस मसले पर हृदय परिवर्तन होगा? दूसरी ओर ब्रिक्स से अमेरिकी राष्ट्रपति भी एक प्रकार से खौफ खाए हैं।

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में शामिल देशों ने जब अमेरिका का नाम लिए बिना ईरान पर हुए हालिया हमले और डब्ल्यूटीओ के नियमों के खिलाफ व्यापार शुल्क (टैरिफ) से वैंकि व्यापार पर बुरा असर पड़ने की बात कही और ब्राजील के राष्ट्रपति लूला दा सिल्वा ने नाटो की तरफ से सैन्य खर्च बढ़ाने के फैसले की आलोचना करते हुए कहा कि शांति की तुलना में युद्ध में निवेश करना हमेशा आसान होता है तो इसे लेकर अमरीकी राष्ट्रपति ट्रंप भड़क गए। उन्होंने ब्रिक्स देशों को नई चेतावनी दे डाली। उन्होंने कहा कि अगर ब्रिक्स देश अमेरिका की विरोधी नीति का समर्थन करते हैं तो उन पर 10 फीसद अतिरिक्त टैरिफ लगाया जाएगा। इसमें दो राय नहीं कि ब्रिक्स शिखर सम्मेमलन का तेजी से बदलते वैंकि घटनाक्रम में अत्यंत महत्त्व है और यह समूह बहुध्रुवीय वि के निर्माण के साथ-साथ ग्लोबल साउथ की मजबूत आवाज बनता जा रहा है और जिसका भारत बराबर पैरोकार रहा है। इसलिए आने वाले समय में भारत की ब्रिक्स में बढ़ती भूमिका स्वयंसिद्ध है। देखना है, अगले वर्ष भारत की अध्यक्षता में होने वाला ब्रिक्स आगे क्या रूप लेता है?

एससीओ और क्वाड के बाद एक बार फिर 67 जुलाई 2025 को ब्राजील के रियो डि जिनेरियो में आयोजित दो दिवसीय 17वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलनमें 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम हुए आतंकवादी घटना की गूंज सुनाई दी। उल्लेखनीय है कि लगभग 15 दिनों के भीतर ये तीनों सम्मेलन आयोजित किए गए और भारत ने ऑपरेशन सिन्दूर के बाद पहली बार इन सम्मेलनों में भाग लिया था।

इस बार ब्रिक्स सम्मेलन ब्राजील की मेजबानी में हुआ, जिसमें पुराने 5 देशों (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका) के अलावा नये सदस्य देशों मिस्त्र, इथियोपिया, ईरान, यूएई और इंडोनेशिया ने हिस्सा लिया। ब्राजील ने 1 जनवरी, 2025 को ब्रिक्स की अध्यक्षता संभाली थी। इस बार की थीम रही-%समावेशी और टिकाऊ वैंकि शासन के लिए ग्लोबल साउथ का सहयोग मजबूत करना' हालांकि, चीन के किगदाओ शहर में आयोजित एससीओ के रक्षा मंत्रियों की बैठक में भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने साझा बयान में पहलगाम की घटना का उल्लेख न होने की वजह से उस पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया था। इसलिए वह बयान जारी नहीं हो सका, लेकिन क्वाड के विदेश मंत्रियों की अमेरिका में आयोजित बैठक के बाद क्वाड के साझा बयान में पहलगाम साजिशकर्ताओं, हमलावरों और फंडिंग करने वालों को सजा दिलाने की मांग की गई और संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देशों से आह्वान किया गया है कि वे जिम्मेदार लोगों को न्याय के कठघरे में लाने के लिए अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत मिलकर काम करें।

निश्चित तौर पर एससीओ, क्वाड तथा ब्रिक्स के शिखर सम्मेलन भारत के लिए जहां कूटनीतिक जीत है, वहीं पाकिस्तान और चीन के लिए एक झटका क्योंकि आतंकवाद के मुद्दे पर ये दोनों देश बेनकाब हुए हैं। ब्रिक्स देशों के नेताओं ने आतंकवाद के सभी रूपों और अभिव्यक्तियों से निपटने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए ब्रिक्स घोषणा-पत्र में 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले की कड़े शब्दों में निंदा की है। यही नहीं, ब्रिक्स नेताओं ने आतंकवादियों की सीमापार आवाजाही, इसके वित्त-पोषण और सुरक्षित ठिकानों सहित सभी रूपों तथा अभिव्यक्तियों में आतंकवाद से निपटने के लिए भी अपनी वचनबद्धता दोहराई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आतंकवाद को मानवता के समक्ष सर्वाधिक गंभीर चुनौती बताते हुए कहा कि आतंकवाद के शिकार लोगों और इसे शह देने वालों को एक स्तर पर नहीं रखा जा सकता। प्रधानमंत्री ने कहा कि आतंकवादियों पर प्रतिबंध लगाने में कोई हिचक नहीं होनी चाहिए। मोदी का यह कथन महत्त्वपूर्ण है कि पहलगाम घटना भारत की आत्मा, पहचान और सम्मान पर घातक हमला था, आगे उन्होंने यह भी कहा कि यह केवल भारत पर किया गया हमला नहीं था, बल्कि पूरे मानवता पर किया गया प्रहार था। आतंकवाद की बर्बरता पर जीरो टॉलरेंस की मांग करते हुए उन्होंने सूचित किया कि आतंकवादी संगठनों पर कड़ी पाबंदी लगाई जानी चाहिए। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि भारत हमेशा संवाद और राजनीतिक मार्ग द्वारा ही अंतरराष्ट्रीय मसलों के समाधान पर अमल करेगा, जिससे वैंकि शांति बनी रहे। इसके अलावा, मोदी ने ब्रिक्स साझेदार देशों के साथ %बहुपक्षवाद, आर्थिक-वित्तीय मामलों और ंिआर्टफशियल इंटेलिजेंस' पर आयोजित संपर्क सत्र में भाग लेते हुए अंतरराष्ट्रीय सहयोग, बहुध्रुवीय और समावेशी वि व्यवस्था के निर्माण पर बल दिया। जहां तक आतंकवाद का प्रश्न है, अभी तक चीन ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अपने वीटो का प्रयोग पाकिस्तान स्थित आतंकवादियों को बचाने के लिए ही किया है। अब जिस प्रकार से एससीओ, क्वाड तथा ब्रिक्स में आतंकवाद को समूल नाश करने की प्रतिबद्धता सदस्य देशों ने व्यक्त की है, देखने की बात होगी कि क्या चीन का भी इस मसले पर हृदय परिवर्तन होगा?

दूसरी ओर ब्रिक्स से अमेरिकी राष्ट्रपति भी एक प्रकार से खौफ खाए हैं। ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में शामिल देशों ने जब अमेरिका का नाम लिए बिना ईरान पर हुए हालिया हमले और डब्ल्यूटीओ के नियमों के खिलाफ व्यापार शुल्क (टैरिफ) से वैंकि व्यापार पर बुरा असर पड़ने की बात कही और ब्राजील के राष्ट्रपति लूला दा सिल्वा ने नाटो की तरफ से सैन्य खर्च बढ़ाने के फैसले की आलोचना करते हुए कहा कि शांति की तुलना में युद्ध में निवेश करना हमेशा आसान होता है तो इसे लेकर अमरीकी राष्ट्रपति ट्रंप भड़क गए। उन्होंने ब्रिक्स देशों को नई चेतावनी दे डाली। उन्होंने कहा कि अगर ब्रिक्स देश अमेरिका की विरोधी नीति का समर्थन करते हैं तो उन पर 10 फीसद अतिरिक्त टैरिफ लगाया जाएगा। इसमें दो राय नहीं कि ब्रिक्स शिखर सम्मेमलन का तेजी से बदलते वैंकि घटनाक्रम में अत्यंत महत्त्व है और यह समूह बहुध्रुवीय वि के निर्माण के साथ-साथ ग्लोबल साउथ की मजबूत आवाज बनता जा रहा है और जिसका भारत बराबर पैरोकार रहा है। इसलिए आने वाले समय में भारत की ब्रिक्स में बढ़ती भूमिका स्वयंसिद्ध है। देखना है, अगले वर्ष भारत की अध्यक्षता में होने वाला ब्रिक्स आगे क्या रूप लेता है?

उत्तराखण्ड शासन

1916—1944

25 जुलाई

स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रदूत

अमर शहीद

श्रीदेव सुमन

को उनकी पुण्यतिथि पर

उत्तराखण्डवासियों की ओर से

शत्-शत् नमन

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी

www.uttarainformation.gov.in | DIPR_UK | UttarakhandDIPR | UttarakhandDIPR

द फैमिली मैन 3 का ऑफिशियल एलान

प्राइम वीडियो ने सीरीज द फैमिली मैन के नए सीजन का टीजर रिलीज कर दिया है। इस टीजर में फैंस को एक झलक मिली है उस कहानी की जिसका इंतजार लंबे वक्त से हो रहा था। राज और डीके की जोड़ी ने इसे अपने बैनर डी2आर फिल्म्स के तहत बनाया है और एक बार फिर मनोज बाजपेयी श्रीकांत तिवारी के रोल में नजर आने वाले हैं, जो एक तरफ देश के लिए एक अंडरकवर जासूस की जिम्मेदारियां निभाते हैं और दूसरी तरफ एक मिडिल क्लास फैमिली में पिता और पति के रोल में तालमेल बैठाते हैं।

द फैमिली मैन के इस नए सीजन को राज, डीके और सुमन कुमार ने मिलकर लिखा है, जबकि डायलॉग्स सुमित अरोड़ा ने लिखे हैं। सीरीज का निर्देशन राज और डीके कर रहे हैं, और इस बार उनके साथ सुमन कुमार और तुषार सेठ भी डायरेक्शन में जुड़े हैं। इस साल आने वाला सीजन 3 और भी बड़ा होने वाला है, क्योंकि श्रीकांत तिवारी का सामना इस बार दो नए खतरनाक दुश्मनों जायदीप अहलावत और निमरत कौर से होगा।

इस सीजन में कहानी देश की सीमाओं के भीतर और बाहर दोनों ओर से आ रहे खतरों के बीच श्रीकांत के संघर्ष को दिखाएगी। पहले के अहम किरदारों के साथ भी वापसी हो रही है, जिसमें प्रियामणि (सुचित्रा तिवारी), शारिब हाशमी (जेके तलपड़े), अलेशा ठाकुर (धृति तिवारी) और वेदांत सिन्हा (अथर्व तिवारी) फिर से अपने किरदारों में नजर आएंगे।

निकिल माधोक, डायरेक्टर और हेड ऑफ ओरिजिनल्स, प्राइम वीडियो इंडिया ने कहा, द फैमिली मैन आज सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि दुनियाभर में प्राइम वीडियो की सबसे पसंदीदा और सराही जाने वाली फ्रेंचाइजी बन चुकी है। जैसे ही दर्शकों ने सीजन 2 देखा, हमें तीसरे सीजन के लिए लगातार रिक्वेस्ट्स मिलने लगीं और इस बार भी, जैसा कि उम्मीद थी, राज, डीके और सुमन ने खुद को पीछे छोड़ते हुए एक नई, दिलचस्प कहानी गढ़ी है, जिसमें दांव पहले से कहीं ज्यादा बड़े हैं और थ्रिल भरपूर है, हमें पूरा भरोसा है कि दुनियाभर के फैंस इस सीजन को खूब पसंद करेंगे और इसे एंजॉय करेंगे।

क्रिएटर्स, डायरेक्टर्स और राइटर्स राज एंड डीके ने सीजन 3 को लेकर अपना विजन शेयर करते हुए कहा, हर नए सीजन के साथ हम खुद को एक नई चुनौती देते हैं, कहानी, स्केल और परफॉर्मेंस को और ऊंचा उठाने की कोशिश करते हैं ताकि दर्शकों को पिछली बार से ज्यादा एंटरटेनमेंट मिल सके, हम अपने फैंस की धैर्य के लिए शुक्रगुजार हैं, सीजन 3 में श्रीकांत और उसकी टीम को ऐसे खतरनाक हालातों से गुजरना पड़ेगा जहां उनकी सीमाएं, रिश्ते और भरोसे सब कुछ कसौटी पर होंगे।

साथ ही श्रीकांत को इस बार एक बदले हुए पारिवारिक माहौल से भी जूझना पड़ेगा। इस बार श्रीकांत और उनकी टीम का सामना कुछ बेहद ताकतवर और खतरनाक नए दुश्मनों से होगा, और हमें यह बताते हुए खुशी हो रही है कि जयदीप अहलावत और निमरत कौर इस सीजन में हमारे नए विलेन के रूप में शामिल हो रहे हैं। प्राइम वीडियो की टीम ने इस सीजन को जिंदा करने में शानदार सहयोग किया है और हम इस नई कहानी को दर्शकों तक पहुंचाने के लिए बेहद एक्साइटेड हैं।

राणा नायडू सीजन 2 में बोल्ड और इंटिमेट सीन कहानी के लिए जरूरी : अदिति शेट्टी

एक्ट्रेस अदिति शेट्टी ने राणा नायडू सीजन 2 में अपने बोल्ड और इंटिमेट सीन के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि ये सीन कहानी और उनके किरदार को बेहतर तरीके से समझाने के लिए जरूरी थे। अदिति शेट्टी ने कहा कि नए सीजन में बहुत कम बोल्ड सीन हैं और जो भी सीन हैं, उन्हें बहुत सोच-समझकर फिल्माया गया है। ये सीन कहानी के लिए जरूरी थे और उनके किरदार को बेहतर तरीके से समझने में मदद करते हैं।

अदिति ने कहा, सीजन 2 में वास्तव में बहुत कम बोल्ड सीन हैं और वे भी सावधानी से शूट किए गए हैं। ये सीन कहानी के लिए जरूरी थे और मेरे किरदार के सफर के लिए यह मायने रखते हैं। कुछ भी बेकार नहीं था, हमने जो भी किया, उसका उद्देश्य और गहराई थी।

अदिति शेट्टी ने बताया कि उन्होंने राणा नायडू सीजन 2 में काम करने के लिए हां क्यों कहा।

उन्होंने कहा, इसके कई कारण थे। मैंने पहले भी मिर्जापुर में निर्देशकों के साथ काम किया था, और मैं पहले से ही राणा नायडू सीजन 1 की बड़ी फैन थी। जब मुझे इस किरदार के बारे में पता चला, तो मैं काफी उत्साहित हुई। मेरा किरदार बहुत दिलचस्प है और कहानी के लिए अहम है। मैं अपने किरदार से काफी प्रभावित हुई। साथ ही, सीन भी जबरदस्त थे। खासकर राणा सर के साथ मेरा फेस-ऑफ सीन शानदार था। इन कुछ चीजों के चलते मैंने हां की।

अदिति ने बताया कि राणा नायडू सीजन 2 में उनका किरदार तसनीम उनकी असल जिंदगी से काफी अलग है।

उन्होंने कहा, तसनीम मेरी असली जिंदगी से बहुत अलग है। मैं मस्ती करने वाली और भावनाओं को खुलकर दिखाने वाली लड़की हूं, लेकिन तसनीम ज्यादा शांत और गंभीर है। एक बात सामान्य है कि हम दोनों में फिटनेस का शौक एक जैसा है।

राणा नायडू सीजन 2 में वेंकटेश दग्गुबती, राणा दग्गुबती, अर्जुन रामपाल और कृति खरबंदा लीड रोल में हैं। यह शो नेटफ्लिक्स पर 13 जून को रिलीज हुआ था।

ग्रीन बिकिनी में एली अवराम ने गिराई बिजली

बॉलीवुड एक्ट्रेस एली अवराम ने अपने लेटेस्ट बोल्ड फोटोशूट से इंटरनेट पर सनसनी मचा दी है. एक्ट्रेस ने इंस्टाग्राम पर कुछ स्टनिंग तस्वीरें शेयर की हैं, जिनमें वह ग्रीन बिकिनी में समुद्र किनारे बेहद ग्लैमरस अंदाज में पोज देती नजर आ रही हैं. खुले बाल, नो-मेकअप लुक और नेचुरल बैकड्रॉप के साथ एली का यह स्टाइलिश अंदाज फैंस को दीवाना बना रहा है. तस्वीरों के साथ उन्होंने कैप्शन में इमोजी का इस्तेमाल करते हुए वेकेशन मूड को जाहिर किया है. फोटो क्रेडिट उन्होंने निखिल शेनॉय फोटो को दिया है, जिन्होंने इस हॉट फोटोशूट को कैप्चर किया है.

फोटोज में एली का कॉन्फिडेंस और कैमरा के प्रति उनका कम्फर्ट लेवल साफ नजर आता है. यूजर्स ने कमेंट सेक्शन में उन्हें सो हॉट, समुद्र तटों की रानी और लुभावनी जैसे कमेंट्स दिए हैं. पोस्ट को अब तक 80 हजार से ज्यादा लाइक्स मिल चुके हैं और ये आंकड़ा तेजी से बढ़ रहा है.

एली अवराम का यह बोल्ड अंदाज उनके फैशन एक्सपेरिमेंट्स को दर्शाता है. वो अक्सर अपने फैशन चॉइसेज को लेकर चर्चा में रहती हैं और यह पोस्ट भी उनके फॉलोअर्स के लिए एक बड़ा विजुअल ट्रीट साबित हो रही है.

बॉडीवॉश घर पर खुद ऐसे बनाकर करें इस्तेमाल, त्वचा को होगा फायदा

बॉडीवॉश का चलन काफी बढ़ गया है क्योंकि यह साबुन की तुलना में त्वचा पर हार्श नहीं होता और गहराई से साफ करने के साथ-साथ त्वचा को मॉइश्चराइज भी करता है।वैसे तो बाजार में कई तरह के बॉडीवॉश मौजूद है, लेकिन उनमें मौजूद कृत्रिम तत्व और रसायन त्वचा पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं।आइए आज हम आपको घर पर बॉडीवॉश बनाने के 5 तरीके बताते हैं, जिनका इस्तेमाल त्वचा के लिए सुरक्षित और लाभदायक साबित हो सकता है।

त्वचा को पोषित करने वाला बॉडीवॉश

सबसे पहले एक कटोरे में आधा कप बिना चीनी वाला नारियल का दूध, थोड़ा बिना गंध वाला लिक्विड कैस्टाइल साबुन, 2 बड़ी चम्मच जोजोबा तेल, 1 बड़ी चम्मच ग्लिसरीन, 1 चम्मच कच्चा शहद और टी ट्री तेल की कुछ बूंदें डालकर अच्छे से मिलाएं।अब इस मिश्रण को किसी बोतल में डालें। इसके बाद जब नहाने का समय हो तो बॉडीवॉश को नहाने वाले स्पंज पर डालकर इस्तेमाल करें।इस बॉडीवॉश का इस्तेमाल आप 1 साल तक कर सकते हैं।

त्वचा पर झुर्रियों और महीन रेखाओं के प्रभाव को कम करने वाला बॉडीवॉश

इसके लिए पहले आधा कप लिक्विड कैस्टाइल साबुन को एक बोतल में डालें, फिर इसमें आधा कप शहद, 1 बड़ी चम्मच अरंडी का तेल और 2 बड़ी चम्मच जैतून का तेल मिलाएं।इसके बाद मिश्रण को अच्छे से मिलाने के बाद इसमें अपने पसंदीदा एसेंशियल ऑयल की कुछ बूंदें मिलाएं, फिर जब चाहें इसका नहाने के लिए इस्तेमाल करें।इस बॉडीवॉश की शेल्फ लाइफ लगभग 6 महीने होगी।

त्वचा के पीएच स्तर को संतुलित करने वाला बॉडीवॉश

सबसे पहले एक बड़ी पंप डिस्पेंसर वाली बोतल में आधा कप लिक्विड कैस्टाइल साबुन, 4 बड़ी चम्मच शुद्ध नारियल का तेल, 1 बड़ी चम्मच ग्लिसरीन, 1 बड़ी चम्मच विटामिन-ई का तेल और किसी भी खट्टे फल से बने एसेंशियल ऑयल की 20-30 बूंदें डालकर अच्छे से मिलाएं।अब इस मिश्रण का इस्तेमाल नहाने के लिए करें।यह बॉडीवॉश लगभग दो साल तक आराम से इस्तेमाल किया जा सकता है।

त्वचा के संक्रमण को दूर करने वाला बॉडीवॉश

सबसे पहले एक बोतल में डेढ़ कप लिक्विड कैस्टाइल साबुन 4 चम्मच ग्लिसरीन मिलाएं, पुदीने के तेल की 10 बूंदें और लौंग के तेल की 15 बूंदें डालकर अच्छी तरह से मिलाएं।आप चाहें तो इस मिश्रण में कुछ टी ट्री तेल या लैवेंडर तेल की भी बूंदें मिला सकते हैं।इसके बाद इस बॉडीवॉश का इस्तेमाल करें। यह कम से कम 1 साल तक आपके काम आ सकता है।

त्वचा के रूखेपन से छुटकारा दिलाने वाला बॉडीवॉश

सबसे पहले एक पंप वाली डिस्पेंसर बोतल में डेढ़ कप लिक्विड कैस्टाइल साबुन, 4 चम्मच ग्लिसरीन, पुदीने के तेल की 10 बूंदें और इलंग-इलंग एसेंशियल तेल की 10 बूंदें डालकर अच्छे से मिलाएं।अब इस मिश्रण का इस्तेमाल बॉडीवॉश के तौर पर करें। यह उन लोगों के लिए ज्यादा फायदेमंद है, जिनकी त्वचा मिश्रित प्रकार की है।इस बॉडी वॉश की शेल्फ लाइफ एक साल है।यहां जानिए त्वचा के प्रकार के अनुसार फेसवॉश बनाने के तरीके।

बिस्तर पर लेटे-लेटे ही करें ये 5 एक्सरसाइज, मिलेगें कई फायदे

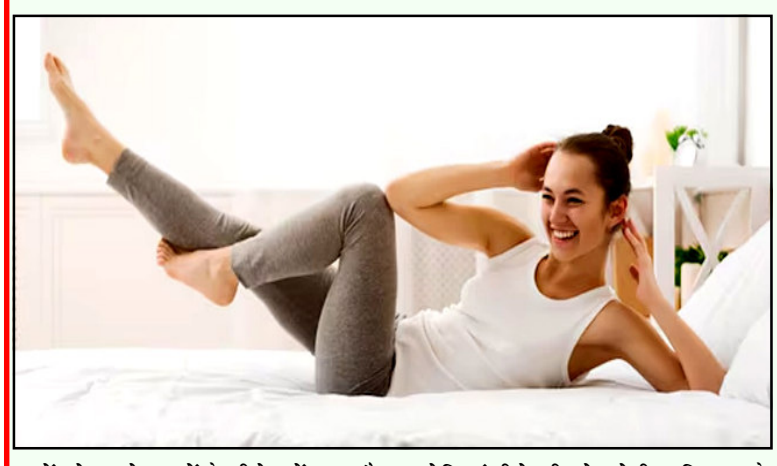

एक्सरसाइज स्वस्थ जीवनशैली का हिस्सा है क्योंकि ये शरीर को सक्रिय रखने, भरपूर ऊर्जा देने के साथ कई अन्य स्वास्थ्य लाभ प्रदान कर सकती हैं।हालांकि, अगर आप इसके लिए अलग से समय नहीं निकाल पाते हैं तो ऐसी कई एक्सरसाइज हैं, जिनका अभ्यास आप सुबह के समय बिस्तर पर लेटे हुए ही कर सकते हैं।आइए जानते हैं कि बिस्तर पर लेटे-लेट की जाने वाले एक्सरसाइज कौन-कौन सी हैं।

सीजर लेग्स- इसके लिए सबसे पहले बिस्तर पर पीठ के बल लेटें और हाथों को अपने कूल्हों के नीचे रखें। इस दौरान हथेलियां नीचे की ओर होनी चाहिए।इसके बाद पैरों को ऊपर उठाएं और उन्हें जितना हो सके सीधा रखें, फिर एक पैर को वापस बिस्तर पर रखें और दूसरे को हवा में।इसी तरह अपने पैरों की स्थिति बदलें और कुछ सेकेंड तक इसे दोहराएं।यहां जानिए वजन घटाने में सहायक स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज।

स्पाइन ट्विस्ट- सबसे पहले बिस्तर पर पीठ के बल एकदम सीधे लेट जाएं।अब दाएं पैर को घुटने से मोड़ें और ऊपर उठाते हुए इसके तलवे को बाएं घुटने पर टिकाएं, फिर पीठ को बायीं ओर मोड़ें और दाएं हाथ को दाएं पैर के घुटने पर रखें।इसके बाद बाएं हाथ को कंधे की सीध में फैलाकर सिर को बाईं ओर घुमाएं।कुछ देर इसी स्थिति में रहने के बाद सामान्य हो जाएं।

रिवर्स क्रंच- इसके लिए बिस्तर पर पीठ के बल लेटकर अपने हाथों को बगल में या अपने कूल्हों के नीचे रखें।इसके बाद अपने पैरों को थोड़ा मोड़े और फिर इन्हें ऊपर उठाएं। अब पैरों को नीचे करें और उन्हें जमीन पर रखें। इस प्रक्रिया को 10 बार दोहराएं।इस एक्सरसाइज के 3 सेट पूरे करने के बाद लगभग 30 सेकेंड का आराम जरूर करना चाहिए, फिर कोई अन्य एक्सरसाइज करें।

जैक स्प्लिट्स- सबसे पहले पीठ के बल लेटकर पैरों और हाथों को फैलाएं।अब पैरों को एकसाथ चिपकाएं और इनके अंगूठों को इंटरलॉक करें, फिर अपनी कोर स्ट्रेंथ का इस्तेमाल करते हुए हाथों और पैरों को एक-दूसरे की तरफ उठाएं।ऐसा करते हुए सांस लें और सांस छोड़ते हुए प्रारंभिक स्थिति में लौट आएं।इस प्रक्रिया को 2-3 बार दोहराएं।यहां जानिए एक्सरसाइज से जुड़ी गलत धारणाएं और उनकी सच्चाई।

शोल्डर टैप्स- इसके लिए पहले प्लैंक एक्सरसाइज की मुद्रा में आ जाएं और दाएं हाथ को सीधा फैलाकर एक सेकेंड के लिए रुकें।इसके बाद दाएं हाथ से बाएं कंधे को थपथपाएं और फिर दाएं हाथ को बिस्तर पर टिका दें।अब अपने बाएं हाथ को सीधा बाहर की ओर बढ़ाकर एक सेकंड के लिए रुकें और फिर इससे अपने दाएं कंधे को थपथपाएं।इस प्रक्रिया को कुछ देर ऐसे ही दोहराएं।

केले के चिप्स बनाम आलू के चिप्स: इनमें से किसे चुनना है बेहतर?

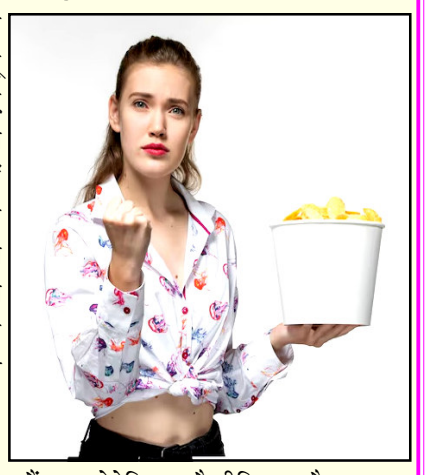

बाजार में कई तरह के चिप्स उपलब्ध हैं, जिनमें केला और आलू के चिप्स सबसे ज्यादा पसंद किए जाते हैं। इन दोनों में से किसे चुनना बेहतर है, यह सवाल आपके मन में जरूर आता होगा। केले के चिप्स को अक्सर सेहत के लिए अच्छा माना जाता है, जबकि आलू के चिप्स का स्वाद बेहतरीन होता है। आइए जानते हैं कि इनमें से किसे चुनना सेहत के लिए बेहतर है और क्यों।

केले के चिप्स के फायदे

केले के चिप्स के कई सेहत लाभ हैं। यह पोटेशियम, मैग्नीशियम और फाइबर से भरपूर होते हैं, जो दिल की सेहत को बेहतर बनाने में मदद कर सकते हैं। इसके अलावा इसमें विटामिन-बी6 और विटामिन-सी भी होता है, जो शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता को बढ़ाने में मदद करता है। इसके अलावा केले के चिप्स में ऐसे तत्व होते हैं, जो शरीर को नुकसान पहुंचाने वाले तत्वों से बचाने में मदद करते हैं।

आलू के चिप्स के नुकसान

आलू के चिप्स का सेवन कई सेहत समस्याओं का कारण बन सकता है। इनमें ज्यादा नमक और चर्बी होती है, जो ब्लड प्रेशर को बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा इनमें कैलोरी की अधिकता होती है, जिससे वजन बढ़ने का खतरा रहता है। साथ ही तले हुए आलू के चिप्स में ऐसे तत्व मिलाए जाते हैं, जो शरीर में सूजन और दिल की बीमारी का कारण बन सकते हैं।

केले के चिप्स और आलू के चिप्स में से किसे चुनना चाहिए?

अगर आप सेहतमंद स्नैक की तलाश में हैं तो केले के चिप्स एक अच्छा विकल्प हो सकता है। यह न केवल स्वादिष्ट होते हैं बल्कि सेहत के लिए फायदेमंद भी होते हैं, वहीं अगर आप स्वाद के शौकीन हैं तो आलू के चिप्स आपके लिए बेहतर रहेंगे। हालांकि, अगर आप किसी भी तरह के चिप्स का सेवन सीमित मात्रा में करते हैं तो दोनों ही विकल्प अच्छा हैं।

केले के चिप्स खरीदते समय इन बातों का रखें ध्यान

बाजार से केले के चिप्स खरीदते समय कुछ बातों का खास ध्यान रखें। हमेशा अच्छी गुणवत्ता वाले उत्पाद ही खरीदें, जो बिना किसी कृत्रिम रंग या स्वाद के बने हों। इसके अलावा पैकेजिंग पर पोषण तत्वों की जानकारी पढ़ें ताकि आपको पता चले कि उसमें कितनी कैलोरी, चर्बी और अन्य पोषक तत्व होते हैं। साथ ही नमक की मात्रा भी चेक करें और कोशिश करें कि कम नमक वाले केले के चिप्स ही खरीदें।

घर पर केले के चिप्स बनाने का तरीका

घर पर केले के चिप्स बनाने के लिए सबसे पहले कच्चे केले को छिलकर पतले-पतले टुकड़ों में काट लें, फिर इन्हें हल्के गर्म तेल में सुनहरा होने तक तलें। जब ये पूरी तरह से ठंडे हो जाएं तो इन पर स्वादानुसार नमक छिड़कें। आप चाहें तो इसमें चुटकीभर काली मिर्च या चाट मसाला भी मिला सकते हैं।

लंबे बालों को उलझन से बचाने के लिए अपनाएं ये 5 तरीके, नहीं होगी परेशानी

लंबे बालों की खूबसूरती को बनाए रखना एक चुनौतीपूर्ण काम हो सकता है, खासकर जब बात उलझनों की आती है। उलझे बाल न सिर्फ देखने में खराब लगते हैं बल्कि उन्हें सुलझाने की कोशिश में बालों को भी नुकसान पहुंच सकता है। इस लेख में हम आपको कुछ आसान और प्रभावी तरीके बताएंगे, जिनसे आप अपने लंबे बालों को उलझने से बचा सकते हैं और उन्हें स्वस्थ रख सकते हैं।

चौड़े दांतों वाली कंघी का करें इस्तेमाल

बालों की उलझनों को कम करने के लिए चौड़े दांतों वाली कंघी का इस्तेमाल करना सबसे अच्छा तरीका है। पतली कंघी से बालों को सुलझाने पर वे टूट सकते हैं और कमजोर हो सकते हैं। इसलिए हमेशा चौड़ी कंघी का ही उपयोग करें। इससे बाल आसानी से सुलझ जाते हैं और उन्हें नुकसान भी नहीं होता है। इसके अलावा यह कंघी आपके बालों की प्राकृतिक चमक को भी बनाए रखती है, जिससे आपके बाल स्वस्थ और खूबसूरत दिखते हैं।

डीप-इन कंडीशनर लगाएं

बालों की उलझनों को कम करने के लिए डीप-इन कंडीशनर का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। शैंपू करने के बाद बालों पर हल्का डीप-इन कंडीशनर लगाएं और कुछ मिनट तक छोड़ दें, फिर पानी से धो लें। इससे बाल नरम और मुलायम हो जाते हैं, जिससे उनकी उलझनें अपने आप ही कम हो जाती हैं। इसके अलावा यह बालों की नमी को बनाए रखता है, जिससे वे स्वस्थ दिखते हैं और आसानी से कंघी से सुलझ जाते हैं।

रात को चोटी बनाएं

रात को सोने से पहले बालों की चोटी बनाना एक अच्छा तरीका हो सकता है, जिससे वे उलझते नहीं हैं। चोटी बनाने से बाल एक जगह पर बंधे रहते हैं और उनकी उलझनें कम होती हैं। इसके अलावा चोटी बनाने से बालों की जड़ों को भी आराम मिलता है और वे टूटने से बचते हैं। यह तरीका बालों को सुरक्षित रखने के साथ-साथ उन्हें स्वस्थ भी बनाए रखता है।

उत्तराखण्ड में धर्मांतरण कानून होगा और सख्त: धामी

सीएम ने दिए निर्देश, पुलिस मुख्यालय स्तर पर गठित होगी एसआईटी, पुलिस ने अब तक 3 हजार कालनेमि अरेस्ट

देहरादून । उत्तराखंड में भेष बदलकर लोगों को ठगने के मामले अक्सर सामने आते रहे हैं। जिस पर लगाम लगाए जाने को लेकर उत्तराखंड सरकार ने ऑपरेशन 'कालनेमि' की शुरुआत की है, जिसके तहत करीब तीन हजार से अधिक लोगों पर कार्रवाई की जा चुकी है। ऐसे में अब उत्तराखंड सरकार ने ऑपरेशन 'कालनेमि' की निगरानी किए जाने को लेकर पुलिस मुख्यालय स्तर पर एसआईटी गठित करने का निर्णय लिया है। ताकि प्रदेश में बेहतर ढंग से ऑपरेशन कालनेमि को संचालित किया जाए और भेष बदलकर लोगों को ठगने वालों पर कालनेमि के तहत कार्रवाई की जा सके।

इसके साथ ही मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रदेश में धर्मांतरण कानून को और सख्त बनाते हुए, जरूरी कदम भी उठाने के निर्देश दिए हैं। दरअसल, सोमवार को सचिवालय में उच्च अधिकारियों के साथ बैठक में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि उत्तराखंड सीमांत प्रदेश होने के साथ ही सनातन की पुण्य भूमि भी है। इसलिए यहां डेमोग्राफी में बदलाव की किसी भी कोशिश को सख्ती से रोका जाए। उन्होंने कहा कि पुलिस इस तरह की संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखे।

सीएम धामी ने कहा कि धर्मांतरण कराने वाले तत्वों के जाल में फंसे लोगों को उचित परामर्श और मार्गदर्शन प्रदान किया जाए। उन्होंने कहा कि हाल की घटनाओं को देखते हुए, धर्मांतरण कानून को और सख्त बनाए जाने की दिशा में तत्काल कदम उठाए जाएं। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि ऑपरेशन कालनेमि भी ऐसे तत्वों पर लगाम लगाने में सफल रहा है। इस मुहिम को आगे भी चलाए जाने की जरूरत है। इसलिए पुलिस मुख्यालय के स्तर पर, इसकी निगरानी के लिए एसआईटी का गठन किया जाए।

गौर है कि 10 जुलाई को सीएम धामी ने, कुछ लोग साधु-संत का भेष धारण कर सनातन धर्म की आड़ में लोगों को ठगने और उनकी भावनाओं से खिलवाड़ करते हैं, का तर्क देकर ऑपरेशन कालनेमि शुरू किया था। इस ऑपरेशन के तहत पुलिस ने ढोंगी और फर्जी बाबाओं पर कार्रवाई करना शुरू किया। पुलिस ने इस तरह प्रदेशभर में 3 हजार से ज्यादा ढोंगी और फर्जी बाबाओं पर एक्शन लिया। इस दौरान कुछ ऐसे मामले भी सामने आए, जिमसें अन्य धर्म के लोग भी हिंदू बनकर साधु संत के भेष में लोगों को ठगने का काम कर रहे थे।

खास बात है कि इस ऑपरेशन के दौरान पुलिस ने भारत में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी नागरिकों को भी पकड़ा। हालांकि कुछ मामलों में पुलिस ने अपने परिवार से बिछड़ चुके लोगों की पहचान कर उन्हें उनके परिजनों से भी मिलाया।

सावन के तीसरे सोमवार को शिव मंदिरों में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

हरिद्वार । सावन के तीसरे सोमवार के पावन मौके पर धर्मनगरी हरिद्वार के शिवालयों में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी। हरिद्वार के दक्षेश्वर महादेव मंदिर में सुबह से ही शिव भक्तों का तांता लगा रहा। लोग तड़के से ही भगवान शिव को जलाभिषेक करने के लिए लाइन में आ लगे थे उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने लोगों को सावन के तीसरे सोमवार की शुभकामनाएं दी हैं।

मान्यताओं के अनुसार वैसे तो सावन का हर दिन पावन माना जाता है, लेकिन इस पूरे माह पड़ने वाले हर सोमवार का विशेष महत्व होता है। सोमवार को शिव की भक्ति का सबसे अच्छा दिन भी माना जाता है। मान्यता है कि शिव को सोमवार का दिन सबसे ज्यादा प्रिय होता है। इसलिए इस दिन शिव की भक्ति और उनका जलाभिषेक करने पर शिव की कृपा अपार मिलती है। भगवान शंकर की आरती की जाती है। यह भी माना जाता है कि शिव सावन के पूरे महीने अपनी ससुराल कनखल में ही निवास कर यहीं से सृष्टि का संचालन और लोगों का कल्याण करते हैं। सावन के तीसरे सोमवार को हरिद्वार के शिव मंदिरों में भोलेनाथ शिव का जलाभिषेक करने के लिए श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। श्रद्धालुओं ने भगवान शिव को जलाभिषेक करने के साथ ही पुष्प और पत्ते चढ़ाए।

मनसा देवी हादसे के बावजूद नहीं डिगी श्रद्धा, सोमवार को उमड़ी भारी भीड़

हरिद्वार । मनसा देवी सीढ़ी मार्ग पर रविवार को दर्दनाक हादसे के बावजूद सोमवार को मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी। सुबह से ही मंदिर परिसर माता के जयकारों से गुंजायमान हो गया। इससे साफ हो गया कि भक्तों की आस्था हादसों से कमजोर नहीं होती। मनसा देवी में हादसा होने के बाद श्रद्धालुओं की संख्या में गिरावट आने के कयास लगाए जा रहे थे। लेकिन सोमवार को मनसा देवी मंदिर परिसर में भक्तों की भीड़ देखकर सभी आश्चर्यचकित थे। सुबह से ही श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा और दोपहर तक यह संख्या हजारों में पहुंच गई। मंदिर परिसर में मनसा देवी की प्रातःकालीन आरती के समय से ही सीढ़ी मार्ग हो या दूसरा पैदल मार्ग हर तरफ से श्रद्धालुओं की भारी भीड़ आती दिखी।

हादसे के जिम्मेदार के खिलाफ हो हत्या का मामला दर्ज : कांग्रेस

हरिद्वार । कांग्रेस ने मनसा देवी मंदिर मार्ग पर हादसे को लेकर शोक जताया है। कहा कि यह हादसा न केवल एक मानवीय त्रासदी है, बल्कि सरकार और प्रशासन की लापरवाही का जीता जागता सबूत भी है। कांग्रेस ने जिम्मेदारों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज करने की मांग उठाई है। पत्रकार वार्ता में कांग्रेस महानगर अध्यक्ष अमन गर्ग ने कहा कि मृतकों की संख्या को छुपाया जा रहा है। कई श्रद्धालु अभी भी गंभीर रूप से घायल हैं और अस्पतालों में जिंदगी और मौत से जूझ रहे हैं। कहा कि पार्टी दिवंगत आत्माओं के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करती है। कहा कि यह घटना पूरी तरह से प्रशासन की असफलता और सरकार की लापरवाही का परिणाम है। उन्होंने कहा कि श्रावण मास की शिवरात्रि के बाद का प्रथम शनिवार और रविवार को शहर में अधिक भीड़ रहती है। यह बात हर वर्ष प्रशासन को ज्ञात रहती है, फिर भी कोई पुख्ता तैयारी नहीं की गई।

नमामि गंगे घाट पर स्वच्छता अभियान शुरू, सीडीओ आकांक्षा कोण्डे ने सफाई कर किया स्वच्छता कार्यक्रम का शुभारंभ

- नदियों को स्वच्छ एवं साफ रखने के लिए उपस्थित अधिकारियों एवं कार्मिकों को दिलाई गई शपथ
- नदी महोत्सव के तहत जनपद में आज से 20 अगस्त तक आयोजित किए जायेगे विभिन्न कार्यक्रम

हरिद्वार । जिलाधिकारी मयूर दीक्षित के निर्देशन में जनपद में नमामि गंगे परियोजना के तहत नदी महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है जिसका शुभारंभ आज

मुख्य विकास अधिकारी आकांक्षा कोण्डे ने नमामि गंगे घाट,चंडी पुल पर किया।इस अवसर पर जिला स्तरीय अधिकारी,नगर निगम एवं नमामि गंगे परियोजना के अधिकारी एवं कार्मिक स्वच्छता एवं श्रमदान अभियान में शामिल हुए। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी आकांक्षा कोण्डे ने कहा कि मां गंगा एवं उसकी सहायक नदियों को साफ एवं स्वच्छ रखने के उद्देश्य से एवं नदियों के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए जनपद में आज से सितंबर 2025 तक ग्राम स्तर तक विशेष स्वच्छता अभियान चलाया जायेंगे जिसमें मां गंगा के सभी घाटों की सफाई कराई जायेगी इसके साथ ही ग्राम स्तर तक भी नमामि गंगे परियोजना एवं जिला पंचायत राज विभाग की ओर से कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा ,जिसमें लोगों को नदियों को साफ एवं स्वच्छ रखने एवं सिंगल यूस प्लास्टिक का उपयोग न करने के लिए लोगों को जागरूक किया जाएगा ।

उन्होंने यह भी अवगत कराया की नदियों के संरक्षण में मानव जीवन के योगदान के संबंध में शिक्षा विभाग के माध्यम से छात्र एवं छात्राओं से निबंध एवं पेंटिंग प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जायेगा।

इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी आकांक्षा कोण्डे ने उपस्थित अधिकारियों एव कार्मिकों को नदियों को साफ स्वच्छ रखने की शपथ भी दिलाई गई। इस अवसर पर परियोजना निर्देशक केएन तिवारी,जिला विकास अधिकारी वेदप्रकाश,मुख्य कृषि अधिकारी गोपाल भंडारी ,जिला पंचायत राज अधिकारी अतुल प्रताप सिंह,परियोजना प्रबंधक मीनाक्षी मित्तल,नगर निगम के कार्मिक सहित नमामि गंगे परियोजन के अधिकारी एवं कार्मिक मौजूद रहे।

मनसा देवी पर तीन गुना बढ़ी पुलिस तैनाती, चंडी देवी पर भी कसा शिकंजा

हरिद्वार । मनसा देवी मंदिर में रविवार को हुए भगदड़ हादसे के बाद प्रशासन ने सुरक्षा व्यवस्था को लेकर मोर्चा संभाल लिया है। सोमवार से मंदिर मार्गों पर पुलिस और एसडीआरएफ की तैनाती तीन गुना तक बढ़ा दी गई है। अब मंदिर में 18 पुलिसकर्मी और 6 एसडीआरएफ के जवानों की ड्यूटी लगाई गई है। हादसे के दिन मनसा देवी पर महज छह पुलिसकर्मी तैनात थे, जिनमें चार मंदिर के अंदर और दो सीढ़ी मार्ग पर थे।

स्वामी,मुद्रक व प्रकाशक अवनीश कुमार द्वारा भगवती प्रिंटर्स,इण्डस्ट्रियल एरिया, हरिद्वार से छपवाकर ग्रा. बसवाखेड़ी पो. मंगलौर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड़) से प्रकाशित किया।
सम्पादकः अवनीश कुमार, मो० 9410553400
ई-मेलः liveskgnews@gmail.com
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र हरिद्वार न्यायालय में ही होगा)
सभी लेखों में सम्पादक की सहमति जरूरी नही है।